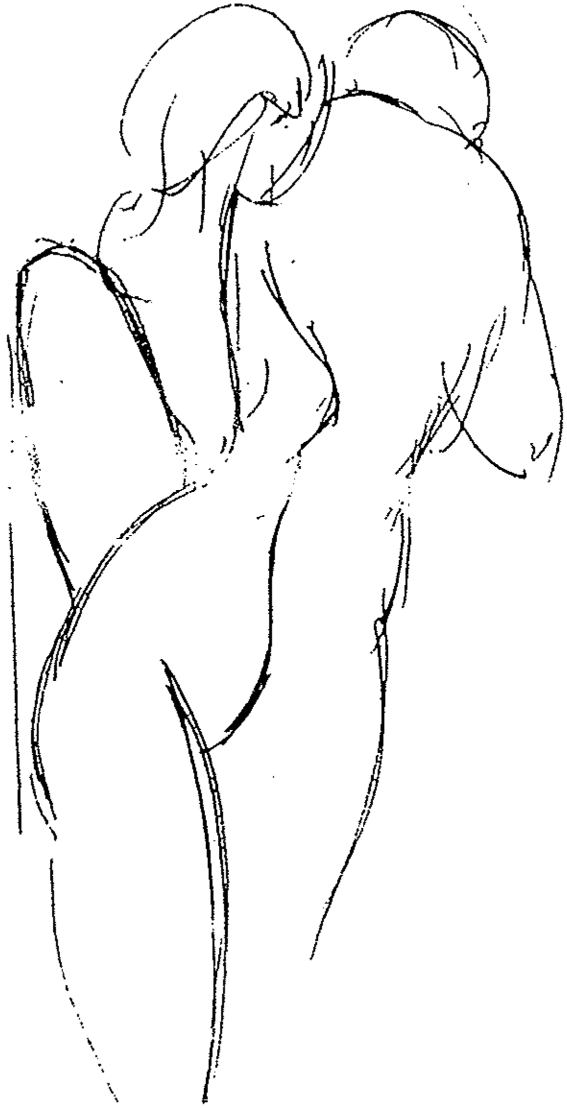

राजेश प्रकाशन
कृष्णनगर — दिल्ली-५१

मरजीवा

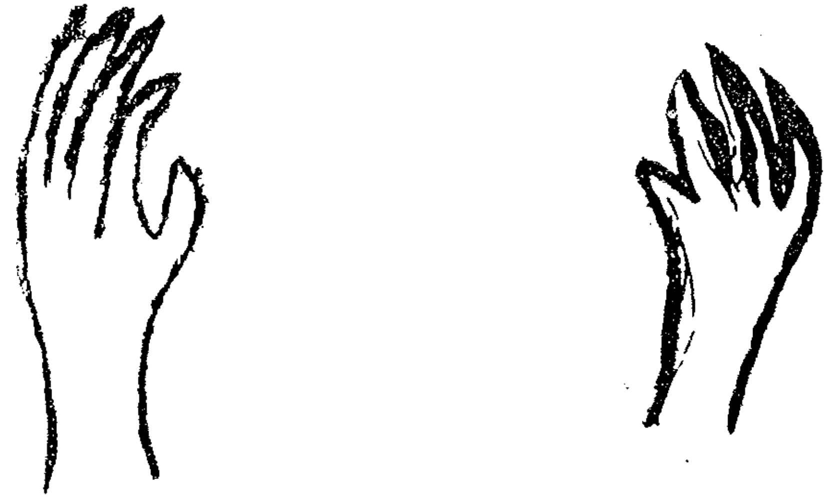

मुद्राराक्षस

मूल्य : दस रुपया
प्रकाशक : इन्द्रेश राजपूत
संचालक राजेश प्रकाशन,
डी० 4/20 कृष्ण नगर, दिल्ली–110051
आवरण : इन्द्रेश, सुशील
मुद्रक : संगम प्रिंटिंग सर्विस कम्पनी शाहदरा दिल्ली–32.

MARZZEEVA (Social Play)
by : MUDRA RAKSHASA

...."पहले यह सोच लो कि आप लोग किसकी तरफ हो...."

पंडित जागेश्वर प्रसाद को

मुद्राराक्षस : जन्म २१ जून १९३१, एम० ए०।

नौकरियाँ : कई पत्र-पत्रिकाओं में स्वतंत्र रूप में लेखन एवं सम्पादन, 'ज्ञानोदय' (पत्रिका) कलकत्ता के सम्पादक, १९६३ से आल इन्डिया रेडियो नई दिल्ली में ! साथ ही १९६८ से आकाशवाणी कर्मचारी महासंघ

प्रकाशित नाटक : योर्स फेथफुली, मरजीवा, तेन्दुआ, तिलचट्टा।

अप्रकाशित नाटक : डाकू, मालविकाग्निमित्र और हम।

सम्पर्क सूत्र : राजेश प्रकाशन
डी ४/२० कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

विशेष : इस नाटक को अभिनय, प्रदर्शन, संग्रह, अनुवाद, फिल्मीकरण अथवा किसी भी प्रकार के सामाजिक उपयोग के लिए लेखक अथवा प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति आवश्यक है।

आकाशभाषित

आज से कोई चौदह बरस पहले मैंने 'मरजीवा' लिखा था। मरजीवा नाम शायद नागार्जुन दे गए थे। इसका पहला प्रदर्शन कपिल कुमार अग्निहोत्री के सहयोग से मैंने स्वयं दिल्ली में १९६६ में किया। रिहर्सल के दौरान इसमें कुछ परिवर्तन किए। कुछ सिर्फ सुविधा के लिए और कुछ ज़रूरी लगे इसलिए।

नाटक बहुत बदमाश विधा है। नाटककार को जितना धोका उसका नाटक दे सकता है उतना किसी कवि की कविता या कथाकार की कथा-कृति नहीं। नाट्य लेखन के प्रति लेखक अगर स्वयं बेहद निर्मम न होकर ज़रा भी कोमल हृदय है तो जर्बदस्त धोका खा सकता है।

उन दिनों तो महसूस किया ही था, आज और ज़्यादा दृढ़ता से विश्वास करता हूँ कि अच्छा नाटक मेज़ पर बैठकर नहीं लिखा जा सकता। उसके लिए मंच का माध्यम समझना ज़रूरी है। मंच का वह माध्यम समझने के लिए ही मैंने मरजीवा स्वयं पेश किया। कपिल कुमार अग्निहोत्री को भारत सरकार के संगीत एवं नाटक प्रभाग का अनुभव प्राप्त था लेकिन उनसे भी तकनिकी सहायता मैंने जानबूझ कर नहीं ली। मंच सज्जा वस्त्र (पोशाकें खासा तमाशा बन गई थीं सिर्फ मशाल दिखाने वाले आदमी की पोशाक छोड़कर) संगीत-प्रभाव, प्रकाश व्यवस्था यहाँ तक कि मंच व्यवस्था भी खुद की। अब सोचकर हँसी आती है। प्रदर्शन मैंने स्वयं नहीं देखा। समीक्षाओं के आधार पर अच्छी और बुरी, दोनों धारणाएँ बना सकता हूँ। हालाँकि मेरे प्रदर्शन पर समीक्षकों ने नाटक के इतने दोष

देखे थे जितने दोष बहुत बाद में श्रीलता स्वामीनाथन द्वारा कुशल निर्देशन के बाद देखे गए।

इस नाटक के साथ "प्रयोगात्कार" भी किया गया, ऐसा मैंने सुना। जयपुर में वासुदेव द्वारा जिन दिनों राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के लिए श्रीलता स्वामिनाथन ने इसे चुना उन दिनों यकायक मुझे लगा कि इसमें काफी पुनर्लेखन जरुरी है। लेकिन चूंकि प्रदर्शन के लिए समय ज़्यादा नहीं था और मैं खासी उलझनों में फँसा हुआ था इसलिए जहाँ-तहाँ इसे छू-छेड़ कर मैंने छोड़ दिया था।

यह नाटक विरोध भी नहीं है और सही-सही आलोचना या मूल्यांकन भी नहीं। न तो यह व्यवस्था का विरोध करता है और न ही दुरवस्था का मूल्यांकन। यह या तो कमेण्ट है या फिर सामाजिक परिवेश से आन्तरिक मजबूरियों के कारण कटे हुए कुछ चरित्रों की टूटन। जब लिखा होगा उस समय शायद कहीं दिमाग में एक अनिवार्य प्रतीकवाद रहा होगा तभी पात्रों के नाम भूमि और आदर्श जैसे थे। यह बेहद स्थूल कलाबाज़ी थी इसमें शक नहीं।

मेरे नाटकों में सेक्स एक खास भूमिका अदा करता है, ऐसा कभी किसी ने कहा था। यह सही है। सेक्स के बिना कोई जीवन खण्ड मैं स्वीकार नहीं कर पाता। हालाँकि उसका प्रयोग बहुत सीमित और नियंत्रित है सेक्स मूल कथ्य भी नहीं है और सजावट भी नहीं है सिर्फ एक मुहावरा है मेरी अपनी नाटकीय भाषा का।

हिन्दी नाटकों की दुनिया में एक खतरनाक बँटवारा हुआ है। मंच विधा का शुद्ध साहित्यिक विवेचन करने वाला एक वर्ग है और नाटक को उसकी सर्जनात्मकता से बाहर अखबारी सम्मति देने वाला वर्ग दूसरा है। दोनों ही नाटक के दुश्मन हैं पहला प्राध्यापकों का दायरा भारत के नाट्यशास्त्र से बाहर ही नहीं आना चाहता जबकि दूसरा 'पार्ट-टाइम क्रिटिक्स' का दायरा ऐसा है जिसके लिए नाटक, समझ का एक आयाम नहीं बल्कि फैशन या शौक़ है। बिना किसी सैद्धान्तिक अनुशासन के ही

अखबारों में जाने कितना कुछ छपता रहता है। इसका ज़्यादा हिस्सा अकादमी या सरकारी अनुदानों की राजनीति पर की जाने वाली अतिनाटकीय बहस का होता है बाकी आपसी दुश्मनी की लड़ाई। पिछले बरस नाटक की दुनिया में सबसे ज़्यादा "गंभीरता" से जो सोचा-लिखा गया उसका सार सिर्फ इतना था कि मोहन राकेश के प्रति पक्षपात किया जा रहा है और जो किताब दिल्ली के एक प्रकाशक ने राकेश की स्मृति में छापी उसे अकादमी ने ग्रांट दी थी या नहीं।

पिछले सात आठ बरसों में दिल्ली में रंगमंच की तकनीकी कुशलता जितनी बढ़ी है उतना ही अधिक कम हुआ है मंच विधा का सिद्धांतबोध। प्रदर्शनों की परिभाषा सिर्फ 'अच्छे' या 'बुरे' की शब्दावली में ही दी जा सकती है। इससे ज़्यादा सूक्ष्म विवेचन की गुंजाइश रही ही नहीं। जिस तरह हिन्दी नाटककार अपने दिमाग में कभी साफ नहीं हो पाया कि उसे शास्त्रीय (क्लासिकी) होना है या पारंपरिक, यथार्थवादी होना है या अनाटकीय उसी तरह मंचकर्मी भी अपने चुनाव में साफ नहीं है। 'आषाढ़ का एक दिन' जैसे नाटक के साथ आम बर्ताव शास्त्रीय (क्लासिकल) होता है जबकि मंचशिल्प मंचभ्रान्ति पैदा करने वाला यथार्थवादी होता है और अभिनय स्टैनिस्लास्की की चारित्रिक अन्तरगता और शास्त्रीय आशिल्पन के बीच झूलता हुआ। यह खिचड़ी आमतौर पर सतही कहे जाने वाले प्रदर्शनों को छोड़कर बाकी सभी में होती है। दर्शकों की हिस्सेदारी इतने स्थूल अर्थों में देखी गई है (यह विदेश के सतही प्रयोगों में भी हुआ है) कि बाकायदा दर्शकों के बीच अभिनेता बैठाए गए हैं। उनकी भूमिकाएं और उनके संवाद भी गढ़े गए हैं।

नाटक के बारे में भारी भरकम फिकरे सीख लेने के बावजूद नाट्यधर्मी आज भी कटे-छंटे, गढ़े-गढ़ाए, सुथरे-सुगठित, कसाव और द्वन्द्व वाले नाटक (या मंचकथाएं?) ही पसंद करता है। गलती ज़्यादा मंचकर्मियों की ही नहीं, नाटककारों की भी है। हिन्दी में नाटक बकसे या चौखटे से बाहर देखने का अभ्यास ही नहीं है। प्रयोग के नाम पर इधर

कुछ कृतियाँ सामने आईं लेकिन उनमें चमत्कार लोभ इतना है कि उनकी सार्थकता बहुत सीमित हो गई है।

मरजीवा का पहला प्रदर्शन प्रयोगलिप्सा से बोझिल था इसमें संदेह नहीं हालाँकि प्रयोग का अतिरेक इसलिए नहीं हो पाया कि मंचकर्म से मेरा परिचय नहीं के बराबर था। जयपुर में वासुदेव द्वारा जो मंच शैली अपनाई गई वह निश्चिय ही मुझे सबसे अच्छी लगी। 'महाकृति (एपिक) की लाक्षणिकता का समावेश करके मरजीवा के समसामयिक सन्दर्भ को व्यापक किया जा सकता है इसमें शक नहीं। कमेंटरी चलचित्र, स्लाइड्स आदि के जरिए वह समूचा परिवेश परिभाषित किया जा सकता है जिसमें पात्रों की नियति बनती है। आज के हमारे समाज में मध्यवर्ग के पढ़े लिखे लेकिन बेकार युवावर्ग की स्थिति क्या और क्यों है यह केवल नाटकीय घटना ही नहीं बल्कि एक वृत्तात्मक इतिहास भी है। वह इतिहास टाँगने की खूँटी है यह नाटक मरजीवा।

नाटक में कई आकस्मिक घटनाएँ हैं। वे घटनाएँ एक दूसरे से आन्तरिक रूप से संबंधित नहीं हैं, यह भी मानता हूं। पर उनका यह आन्तरिक संबंध पेश करना मेरा उद्देश्य नहीं है।

'मरजीवा' के साथ मुझे जो एक नाम बराबर याद रहता है वह नेमिचंद्र जैन का है। नेमि जी के कारण ही शायद मैं नाटक से कहीं जुड़ा रहा, उसे एक जिम्मेदारी के तौर पर अपनाए रहा। गोकि नेमि जी की इस आशंका से मैं कभी सहमत नहीं हो पाया कि मेरा मज़दूर आन्दोलन से जुड़ना मेरे रचनाकार को अपना समय नहीं लेने देगा। सच यह है कि जो सत्य मुझे मजदूर आन्दोलन से मिला उसने मेरे लेखन को भाषा दी।

मजदूर आन्दोलन का उलझाव अपने आप में कम नहीं होता। व्यस्तता के अलावा जो बड़ा खतरा इससे किसी रचनाकार के लिए पैदा होता हैं वह है रूमानियत का। मजदूर आन्दोलन या तो आदमी में सरलीकरण की आदत पैदा करता है या फिर कोई शुद्ध रूमानी हो उठता

है। यूनियन-व्यवस्था को थोड़ी सी तटस्थता से देखने वाला इस रूमानियत से तो बचता ही है—मानवीय नियति के उन पहलुओं से भी साक्षात् करता है जो संघर्ष की यान्त्रिकता से उभरते हैं।

यूनियन का काम करते हुए मुझे कभी कभी लगा कि अचानक मेरे सामने से इतनी सघन अनुभूति वाली घटना-स्थितियाँ गुज़र गईं कि न केवल मेरे शब्द उनसे छोटे पड़ गए बल्कि मेरे भावबोध का अस्तित्व भी खतरे में पड़ गया। शिल्पसिद्ध आधुनिकतावादी का भावबोध निश्चय ही अत्यन्त संवेदना-सघन होता है लेकिन उसी अनुपात में परिकल्पना जीवी भी होता है। यथार्थ का खुरदरा स्पर्श उसे डिस्टर्ब करता है। ऐसी हालत में अगर वह अपने आपको पुनर्गठित नहीं करता तो वह भावबोध रह ही नहीं जायगा। यांत्रिक मार्क्सवादी बुद्धिजीवी के साथ यही दुर्घटना हो जाती है। यूनियन ने मुझे यान्त्रिक मार्क्सवादी होने से बचाया इसमें शक नहीं।

"मरजीवा" के साथ एक रोचक, दुखद या दुर्भाग्यपूर्ण और सबक देने वाला अनुभव अनायास ही जुड़ गया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के साथ मेरा सीधा सम्पर्क नहीं के बराबर ही रहा है। आमतौर पर अशोका होटल हो या राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मुझे हर ऐसी जगह असुविधा और थोड़ी जुगुप्सा होती है जहाँ आदमी को लगातार गर्दन में एक खास तनाव रखना पड़ता है। नकली योरुप के ये छोटे छोटे कोठे जितनी ज्यादा किताबें इकट्ठी करते हैं उतने ही ऊपरी मंजिल से खाली होते हैं। विद्यालय के कुछ वरिष्ठ स्नातक मेरे अभिन्न मित्र हैं लेकिन वे भी सिर्फ इसलिए कि उनकी गर्दन का वह खम उनका स्थायीभाव नहीं बना। शायद सन् ७१ की मई में मुझे मालूम हुआ कि नाट्य विद्यालय के लिये श्री लता स्वामिनाथन "मरजीवा" पेश करना चाहती हैं।

प्रदर्शन के पहले दिन मैं जा नहीं सका। दूसरे दिन किसी ने प्रदर्शन के दौरान मेरे हाथ में एक चिट पकड़ा दी। चिट पर सिर्फ इतना लिखा था कि वहीं काम करने वाला कोई मुझसे, प्रदर्शन के बाद चुपचाप,

एकान्त में मिलना चाहता है। वह मुलाकात हुई। मिलने वाले राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के दो-तीन कर्मचारी थे। बड़े सीधे शब्दों में उन्होंने कहा कि वे अपनी यूनियन बनाना चाहते है और मुझे उसका अध्यक्ष बनायेंगे। कुल सदस्य संख्या तेरह।

मैं सहसा उन्हें सही जवाब नहीं दे पाया। आमतौर पर यूनियन बनाने वाला आदमी प्रशासन का सहज शत्रु हो जाता है। फिर भी मैंने सोचा शायद राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में यूनियन बनने की घटना का स्वागत किया जाय। देश के एक विख्यात मंचकर्मी उसके निर्देशक हैं, संभवतः यूनियन बनने की घटना उन्हें बुरी न लगे। तेरह कर्मचारियों की यूनियन लड़ाई वैसे भी कितनी करती फिर भी उन्हें सलाह यही दी कि वे किसी मिल मैनेजर से नहीं मंचकर्मी बुद्धिजीवी से मुखातिब होंगे इसलिए आदर भाव छोड़े नहीं। हालाँकि यह बेईमानी भरी सलाह थी। यूनियन के रिश्ते में बुद्धिजीवी का कन्सेशन निहायत छिछोरा प्रयत्न होगा। मई ७१ से लेकर सन् ७३ की जून तक मैंने दो-तीन खत विद्यालय के बुद्धिजीवी मंचकर्मी को लिखे। वे पत्र उनके पास होंगे। एक दो पत्र इसी सिलसिले में पु० ल० देशपाण्डे को भी लिखे। पत्रों में दुबारा बेईमानी की कि मैंने यूनियन के अध्यक्ष के नाते नहीं, एक लेखक के नाते यह अनुरोध किया कि निदेशक महोदय कर्मचारियों की बात सुन लें। अगर मेरा बीच में पड़ना नागवार गुज़रता हो तो मैं यूनियन से इस्तीफा देने को तैयार हूँ। यही बात मैंने दुबारा दिल्ली के लेबर कमिश्नर के माध्यम से भी कहलाई।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के तेरह कर्मचारियों की उस छोटी सी यूनियन से निदेशक-बुद्धिजीवी का झगड़ा इस बात पर नहीं हुआ कि यूनियन कोई गलत या नाजायज़ माँग पेश कर रही थी। झगड़ा सिर्फ इस बात पर हुआ कि बुद्धिजीवी यूनियन नाम की चीज़ नापसन्द करते हैं। दिल्ली लेबर कमिश्नर के माध्यम से दुबारा मैंने कहलाया कि अगर बुद्धिजीवी महोदय को ट्रेड यूनियन से चिढ़ है तो मैं यूनियन को सोसा-

इटीज़ ऐक्ट के अन्तर्गत पुनर्पंजीकृत कराने को तैयार हूँ लेकिन कर्मचारियों को सामूहिक संगठन के स्तर पर काम करने की सुविधा वे दे दें। यह भी बुद्धिजीवी को स्वीकार नहीं था।

दरअस्ल हिन्दुस्तान का दुश्मन अंगरेज़ ही नहीं था। साहबी भी उतनी ही बड़ी दुश्मन है। जो तन से नहीं मन से अँगरेज़ बना उसे इस बात से बेहद परेशानी होती है कि कोई ऐसा शख्स जो उसका मातहत हो उससे सीधे बात करे। यूनियन बन जाने पर यह स्वीकार करना पड़ता है। इस देश में आज भी नगर प्रसाशक, मन्त्रालय का सचिव, होटेल का मैनेजर या राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का निदेशक इसीलिए यूनियन शब्द सुनते ही भड़कता है, नाहक दुशमन हो जाता है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के बुद्धिजीवी के साथ भी यही हुआ। उसे हतक महसूस हुई कि "हुजूर माई बाप" कहने वाला स्टोर कीपर या बढ़ई या माली या चौकीदार उससे "बातचीत" करे।

सन् १९७१ में दिल्ली में होटेल मैनेजर जीत गए थे, १९७३ में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के बुद्धिजीवी निदेशक भी जीत गए। यूनियन को मैंने कह दिया कि वहाँ लड़ने से लाभ नहीं क्योंकि तादाद बहुत थोड़ी है और सभी तेरह आदमी बहुत गरीब हैं। मैंने कहा कि वे लोग "बातचीत" की आशा छोड़ दें, अनुरोध मात्र करते रहें, देखा जायेगा।

एक रोज़ सहसा यूनियन ने बुलाया। आपत्कालीन सभा थी। विषय सुनकर मुझे हँसी आ गई। निदेशक महोदय ने कर्मचारियों से ओवर टाइम काम तो कराया लेकिन उसका भत्ता देते वक्त नाराज़ हुए। नतीजे में कर्मचारियों ने अपना भत्ता लौटा दिया। कर्मचारियों का भत्ता लौटा देना बुद्धिजीवी को अपमानजनक लगा। पर्सनल इन्सल्ट!

इसके बाद के कुछ दिन जिन्दगी में भूलेंगे नहीं। एक क्रान्तिकारी युवक छात्र जो उन दिनों विद्यालय की रिपर्टरी के वेतनभोगी हो गए थे इतने उत्तेजित हुए कि कर्मचारियों को निकाले जाने की माँग ले आए। बुद्धिजीवी इतना नाराज़ हुआ कि उसने कर्मचारियों को लगभग निलंबित

कर दिया। मुझे बताए बगैर क्रान्तिकारी युवक के दबाव में तेरह आदमियों ने माफ़ीनामा लिखा। ऐसी गलती के लिए माफ़ीनामा जैसी घटना दास-युग की याद अनायास ताज़ा कर गई। इस माफ़ीनामे के बाद भी कर्मचारियों के साथ जो हुआ वह मुझे आजीवन सालता रहेगा। रात को साढ़े ग्यारह बजे अपने घर पर बार-बार रो पड़ता हुआ चेहरा मैं भूल सका तो निश्चय ही मैं उस बुद्धिजीवी जैसा कुछ अपने को मानूँगा।

"मरजीवा" नाटक इसलिए मैंने अपने सहयोगी मजदूर नेता जोगेश्वर को समर्पित किया है। जोगेश्वर बाबू को नेता कहना बहुत सही नहीं है। नेता एक तंत्र होता है जबकि जोगेश्वर एक घटना है। आकाशवाणी के मजदूर संगठन से अब तक जुड़ा रह गया हूँ इसके पीछे कहीं इस बूढ़े आदमी का खिंचाव है। जोगेश्वर यूनियन लीडर नहीं हैं; प्रतिनिधि हैं, प्रतीक हैं। वे एक तरफ एक समूचे वर्ग की टूटन हैं तो दूसरी ओर उन लोगों की लड़ाई। शिक्षा और अंगरेज़ी भाषा ने उस आदमी को दबाकर तीन चौथाई जमीन के अन्दर कर दिया वरना शायद वह इस देश का सबसे कद्दावर आदमी होता। आदमी की भाषा और आदमी की नियति दोनों के ही बारे में मेरी पहचान इस बूढ़े प्रतिनिधि के माध्यम से गहरी हुई है।

इस नाटक के बारे में जो भी आलोचनाएँ हुई हैं उन्हें मैं ज्यों की त्यों छोड़ देना चाहता हूँ। ऐसी बहस कोई उठी नहीं जिससे सीधे नाटक का रिश्ता हो। आदमी ऐसे तरीकों से क्यों मारा गया यह चिन्ता नहीं है। आदमी किन तरीकों से मारा जाता है यह हम अचानक खोजने लगते हैं। पोलिथीन बैग, पेट्रोलदाह, पिल्स और डी० डी० टी०—इन साधनों से मारा है मैंने। साधन नकली हैं मैं मानता हूँ। इसीलिए सहसा क्या वे तमाम साधन याद नहीं आ जाते जिनसे सचमुच आदमी मारा जाता है?—भूख से, मिलावट भरे खाद्य पदार्थों से, गोलियों-लाठियों से! इन संभावनाओं की याद ताज़ा करने के लिए ही है कृत्रिम साधन।

कुछ और बातें भी कही गईं। उन पर विस्तार से कभी लिखूँगा।

"मरजीवा" के संवादों की भी आलोचना देखने में आई। जो कहा गया उसका सार यह था कि शब्द-मोह इस नाटक पर हावी है। इस बात की सफाई देना ज़रूरी नहीं है लेकिन इस विषय पर थोड़ा-सा विचार ज़रूरी है। नाटकों में संवादों की दो स्थितियाँ होती हैं—अनिवार्य और आवश्यक। आवश्यक संवाद नाटक के इतिहास में बहुत देर की खोज है। यथार्थवादी और प्रकृतिवादी नाटकों का अनुसंधान हैं आवश्यक संवाद। संवाद इन नाटकों में केवल एक सहायक भूमिका निभाते हैं। यथार्थवादी नाटकों में चूँकि मंच भ्रान्ति एक महत्वपूर्ण स्थिति होती है और चूँकि समूचे दृश्य को बारीकी के साथ वास्तविकता का प्रतिबिम्ब बनाने की कोशिश की जाती है इसीलिए संवादों को भी एक सीमा में रहना होता है। अनिवार्य संवादों वाला नाटक संदेश प्रमुख नाटक होता है और वह इस बात को छुपाता नहीं है कि वह शुद्ध रूप से नाटक है किसी वास्तविकता का भ्रम नहीं। इसीलिए जहाँ यथार्थवादी नाटक ध्वनि प्रभाव, परदे अथवा मंच सज्जा और रोशनी आदि के करतब भी दिखाता है वहाँ पारंपरिक मंच (जिसमें संवाद अनिवार्य होते हैं पर आवश्यक नहीं) इन सबसे मुक्त रहकर मूलतः संवादों से ही काम चलाता है।

विसंगति के रंगमंच ने आवश्यक संवादों का नाटकीय अनिवार्यता बनाकर इस्तेमाल किया है इसीलिए नितान्त यथार्थवादी संवाद भी बेकेट या आयोनेस्को के नाटकों में अक्सर अतिनाटकीय हो जाते हैं। चेयर्स जैसे नाटक में तो वही संवाद जो यथार्थ की भ्रांति पैदा करने वाली नाटकीय भाषा से बने हैं सहसा पारंपरिक नाटकों की तरह व्याख्यात्मक हो उठते हैं। मंच पर होने वाली नाटकीय घटना-श्रृंखला इन संवादों में आए ब्योरे के जरिए ही स्पष्ट होती है। इब्सन जैसा नाटककार भाषा के इस प्रयोग को बर्दाश्त नहीं कर सकता। जो चीज़ दिखाई जा सकती है उसका संवादों में विवरण उसे कतई अच्छा नहीं लगता। नाटक शब्द-बोझिल न हो जाएँ इसलिए भारतीय शास्त्रीय नाट्य परंपरा ने संवादों के समान्तर

संकेतों की भाषा का भी काफ़ी व्यापक प्रयोग किया था। लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि नाटक फिर भी संवाद निर्भर ही रहता था।

नाटक जितनी हद तक अपनी नाटकीयता की अनिवार्य कृत्रिमता से मुक्त होता गया उतना ही अधिक उसे आवश्यक संवादों का अनुसन्धान भी करना पड़ा। लेकिन सवाल यह है कि नाटक-नाटक जैसा क्यों न दिखाई पड़े ? वह नाटक लगने के बजाय किसी वास्तविकता का भ्रम क्यों बने ? अगर नाटक एक सामूहिक अनुष्ठान है तो उसमें भी वही कृत्रिमता होनी चाहिए जो हमारे किसी भी दूसरे सामाजिक अनुष्ठान में होती है। योरुप से भारत के शास्त्रीय नाट्य लेखन में एक गहरा भेद यह भी है कि भारत के अधिकांश शास्त्रीय नाटककार भी नाटक को नाटक के रूप में ही पेश करते रहे हैं। सूत्रधार का आविष्कार इस बात का स्पष्ट सुबूत है।

मरजीवा के संवाद अनिवार्य संवाद हैं। वे वहाँ हैं इसलिए कि वे अभीष्ट हैं। नाटक उन संवादों के लिए है। संवाद इसीलिए नाटकीय गति से कई जगह अलग हो जाते हैं और स्वयं गतिमान हो जाते हैं। संवादों का इस तरह नाटकीय दायरे के बाहर आते रहना नाटक के कथ्य की मजबूरी है। इसीलिए मैं वासुदेव के उस 'प्रयोगात्कार' को स्वीकार करता हूं जो संवादों की इस मुक्ति को और तीखा करती है।

नाटक की भाषा साहित्य की अन्य विधाओं की भाषा से अलग होती हैं। मरजीवा में नाटक की विशिष्ट भाषा नहीं है बल्कि आम साहित्यिक अभिव्यक्ति की ही भाषा का इस्तेमाल हुआ है। नाटक की वह भाषा जो साहित्यक व्यंजनाओं से मुक्त होकर अर्थगहन भी होती है और गहरी भी, मुझे यूनियन में काम करते हुए ही मिली। व्यवहार से मैंने पाया है कि यह आमधारणा सही नहीं है कि भीड़ में भाषण की भाषा अर्थ गहन नहीं होती। जो भाषण एक निराकार भीड़ को आन्दोलन का रूप दे सकता है या उसी भीड़ को गिरफ्तारी, अश्रुगैस और गोली का सामना करने को तैयार कर सकता है वह अर्थगहन नहीं होता यह कहना

दिमागी अन्धेपन के अलावा और कुछ नहीं। संबोधित व्यक्तियों के सामूहिक व्यक्तित्व का अन्तरंग इस तरह आन्दोलित करने की प्रक्रिया और सही नाटक में कोई अन्तर नहीं।

रंग-घटना में दर्शकों की साझेदारी भी मैं इसी तरह देखता हूँ। दर्शकों (या भीड़ के श्रोताओं) की साझेदारी के बाद उनको संबोधित भाषण एक तीसरी चीज़ पैदा करता है—आन्दोलन। नाट्य प्रदर्शन के साथ दर्शक की साझेदारी को भी इसी तरह किसी तीसरी घटना को जन्म देना चाहिए। ब्रेख़्त के निकट दर्शकों की साझेदारी का यही अर्थ था।

मरजीवा वैसा अनुष्ठानात्मक नाटक नहीं है, यह मैं महसूस करता हूं। नाटक सामाजिक अनुष्ठान न बन पाए तो इसे मैं अपनी असफलता ही मानूँगा। लेकिन वह नाटक जो एक चौखटे की चमत्कार-परक तस्वीर न होकर अनुष्ठान हो, एक सिद्धि से कम नहीं होती। पिछले दिनों अनुष्ठान की अनुकृतियाँ करने के उद्देश्य से कई पारंपरिक शिल्प साध्य नाट्यकृतियाँ लिखी गईं। इसमें शक नहीं कि पश्चिम के यात्री को ऐसी रचनाएँ उसी तरह मोहती हैं जैसे राजस्थानी जूतियां या खादी के अँगरखे। लेकिन व्यावसायिकता ने हर विधा में इसी तरह अपने-अपने घोंसले बनाए हैं फिर नाटक ही उसका अपवाद क्यों हो ?

भरत मुनि को अनुष्ठान वाले नाटक से चिढ़ थी। फिर भी अनुष्ठान के लक्षणों से वह शास्त्रीय नाटक मुक्त नहीं कर पाया। दरअस्ल उसका सारा प्रयत्न ही था अनुष्ठानधर्मी नाटक को तोड़-मरोड़ कर आक्रान्ता आर्यसभ्यता के सांस्कृतिक हथियार की तरह उसका प्रयोग करना। इसीलिए उसने नाटक को वह शास्त्रीय रूप दिया जो अनुष्ठान से मीलों फ़ासले पर हो। इस समूची परम्परा ने इसीलिए नाटक को "अनुकृति" ही माना। अठारहवीं-उन्नसवीं सदी के योरपीय नाट्य विचारकों ने कालान्तर से इसी नाटकीय अनुकृति को ही आधारभूत धारणा बनाया (Dramatic impersonation-Diderot)। ज्याँ लुई बरल्त ने अभिनय

सिद्धान्तों में विशेष स्थान वस्तु-अध्ययन और अनुकरण को ही दिया। स्टैनिस्लावस्की स्वयं अपेक्षाकृत गूढ़तर अवधारणाओं तक पहुंचने के बावजूद नाटक की अनुकरणधर्मिता को छोड़ नहीं पाया। समूचा यथार्थवादी-प्रकृतिवादी नाट्यान्दोलन अनुकृतिधर्मिता पर ही जीवित रहा।

हालाँकि कीथ जैसे अध्येताओं ने इस बात का विरोध किया है कि शास्त्रीय नाटक अनुष्ठान या कर्मकाण्ड का ही संस्कार है लेकिन मैक्समूलर और श्रोडर आदि के इस विचार को महत्वपूर्ण मानता हूँ कि कर्मकाण्ड ही प्रारंभिक नाटक हैं और वैदिक इन्द्र-मरुत, यम-यमी, पुरूरवस्-उर्वशी संवाद आदि तत्कालीन लोकमंच के ही द्वारा अपनाए प्रारूप थे। दक्षिण भारत की प्राचीन नाट्य-परम्परा में द्विपात्रीय संवादों की बहुलता है। और संयोग से देवीअत्तम् जैसी ये नाट्य कृतियां मंदिरों का कर्मकाण्ड ही हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में एक प्रसंग महत्वपूर्ण है। भरत के "त्रिपुरारि" नाटक का प्रदर्शन देखने के बाद शंकर (जो निश्चय ही अनार्य नेता थे) बहुत गद्‌गद् नहीं हुए। बल्कि उन्होंने सुझाव दिया कि उसमें नृत्य शामिल किया जाय। स्वयं शंकर के आदेश पर शंकर के साथी तण्डु ने ताण्डव और पार्वती ने लास्य नृत्यों का भरत के नाटकों में समावेश कराया। अगर धनंजय की "अवस्थानुकृति-र्नाट्यम्" वाली धारणा ही सही होती तो नृत्य के समावेश से उसकी पूर्णता का जिक्र न आता। नृत्य केवल मनोरंजन नहीं है। खुद भरत की भी, परवर्ती शास्त्रीय नाटककारों की तरह, नाटक को शुद्ध मनोरंजन बनाने की हिम्मत नहीं हुई थी—"यज्ञेन संमितं ह्येतद्रङ्गदैवतपूजनम्"। यज्ञ के समान्तर रंगकर्म को खड़ा करने का मकसद सिर्फ कर्मकाण्ड को नई विधा देना ही रहा होगा, इसमें संदेह नहीं। अगर यह स्थिति न होती तो निश्चय ही इन्द्र को ध्वजोत्सव के समय **भरत** द्वारा किए दैवविजय नाटक के समय अनार्य-प्रदर्शन पर लाठीचार्ज की ज़रूरत न होती।

नृत्यसमाविष्ट मंच की अहमियत ग्रातोव्स्की जैसे मंचकर्मी में समझी

जा सकती है। आंगिक मुद्राओं द्वारा ग्रातोव्स्की उन मूल बिम्बों को जगाने की बात करता है जो सामूहिक स्मृतियों में रहते हैं। सामूहिक कल्पनाशीलता का इस्तेमाल या ग्रातोव्स्की करता है या वह नृत्य समाविष्ट मंच जो एक सामाजिक अनुष्ठान हो। ग्रातोव्स्की की प्रयोगलिप्सा को अगर हम भूल जायं तो नाटक की मुक्ति का सबसे बड़ा आन्दोलनकारी वही दिखाई देगा।

ब्रेख्त के प्रति अपनी गहरी आस्थाओं के बावजूद मुझे कभी कभी लगता रहा है कि उसका रंग-दर्शन, कहीं उसका विवेक कम, उसकी महत्वाकांक्षा ज़्यादा है। ब्रेख्त दर्शकों को नाटक के साथ बहाने के बजाय उन्हें बौद्धिक उद्वेलन देने की बात करता है लेकिन ब्रेख्त के बेहतरीन हिस्से वही हैं जो दर्शक को बहा ले जाते हैं। अनुष्ठान इस दृष्टि से भिन्न है। वह दर्शकों को बहाता है और बहाकर ही उनकी जड़ता को तोड़ता है। ब्रेख्त अभिनेय चरित्र में खो जाने से नफरत करता है लेकिन अनुष्ठानधर्मी नाटक में अभिनेता अभिनेय में इतना डूब जाता है कि स्वयं अभिनेता का मानसिक-कायिक रूपान्तरण हो जाता है। देवी द्वारा असुर के वध का रूपक मंदिर में खेले जाने के समय कुमारम् पर स्वयं देवी आ जाती है। स्टैनिस्लाव्स्की आवेगात्मक स्मृति (इमोशन मेमरी) को इतनी दूर जाते देख घबरा जाए।

मरजीवा जैसे नाटक में निश्चय ही न तो नृत्यसमाविष्टि है और न ही आवेगात्मक अनुकृति का अनुष्ठानधर्मी उद्दीपन। लेकिन निश्चय ही वह "अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्" भी नहीं ही है। नाटक मूलतः समीक्षात्मक है इसलिए सिद्ध मंच-पद्धतियाँ उस पर सही सही लागू न हो पाएँ तो इसमें आश्चर्य नहीं।

१५ अगस्त १९७४

—मुद्राराक्षस

पहला प्रदर्शन : श्रीमती इन्दिरा द्वारा मुद्राराक्षस के लिये अप्रैल, सन् १९६६ में, नई दिल्ली में !

चौथा प्रदर्शन : श्रीलता स्वामीनाथन द्वारा राष्ट्रीय-नाट्य विद्यालय में सन् १९६२ में !

पात्र :

आदर्श
भूमि
बाप
पुलिस अफसर
शिवराज गंधे
युवक
पत्रकार
चूहेमार
तथा अन्य

मरजीवा

पहला अंक

[भूमि मेकप कर रही होती है कि आदर्श अन्दर आता है]

आदर्श : (हँसकर) कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। कर लो, आराम से कर लो मेकप। लेकिन वह आएगा इसमें मुझे शक है।

भूमि : साबुन का वह टुकड़ा। बिल्कुल खत्म हो गया था ?

आदर्श : वो ? हाँ।

भूमि : बिना साबुन से मुंह धोए···

आदर्श : पाउडर से ठीक हो जायगा।

भूमि : खाक ठीक हो जायगा।

आदर्श : उधर मोड़ पर देखो कितनी भीड़ हो गई है।

भूमि : भीड़ ?

आदर्श : और क्या। कैसे भीड़ हो जाती है। दो मिनट में। फिर दो ही मिनट में गायब भी हो जाती है। तुमने तो नहीं रखा था कहीं साबुन ?

भूमि : कहीं थोड़ी सी रुई तो नहीं होगी ?

आदर्श : रुई ?

भूमि : चलो छोड़ो।

आदर्श : कहो तो मैं फिर देख लूँ बाहर ?

भूमि : क्यों ?

आदर्श : क्यों क्या, हो सकता है वह मकान भूल गया हो।

भूमि : मकान कैसे भूल जायगा।

आदर्श : वो तो नहीं भूलेगा लेकिन···यह भी तो हो सकता है कि वह खुद न आ रहा हो बल्कि किसी और को भेजा हो।

भूमि : और किसको भेजा होगा।

आदर्श : किसी को भी।

भूमि : उँह, लिप्स्टिक के नाम पर तो इसमें कुछ सूँघने को भी नहीं बचा।

आदर्श : लिप्स्टिक···वैसे अब तो लड़कियाँ लगाती भी नहीं हैं। फिर तुम्हें फोटो ही तो खिंचाना है। फिल्मों तक में औरतें लिप्स्टिक छोड़ रही हैं। भूमि अब तो आधा घंटा ऊपर हो गया। मुझे तो लगता है आएगा ही नहीं। मैं बाहर देखूँ ?

[बाहर जाता है]

भूमि : (मेकप खत्म करके) ठीक है ? ठीक है ! कैसी लग रही हूं···ठीक है न ? ये साड़ी···लेकिन फोटो में साड़ी।

[अन्दर से बूढ़ा बाप निकलता है और जैसे काल्पनिक कैमरे से फोटो लेता है]

भूमि : (चीखकर) अरे !

बाप : थैंक्यू। थैंक्यू। वन मोर···ज़रा सा सामने झुकिए···प्लीज़ (फिर काल्पनिक फोटो लेता है) एक और···ज़रा सा···प्लीज़ देखिए ये ऊपर का बटन खोल दीजिए।

[वह ब्लाउज़ का बटन खोलने को बढ़ता है कि भूमि उसे झटक देती है]

बाप : थैंक्यू। थैंक्यू। वन मोर। एक और···

भूमि : पापा···

आदर्श : (आकर) क्या हुआ ? पापा···

बाप : मगर···तुम···वो···मगर···

आदर्श : (सख्ती से) पापा···

बाप : थैंक्यू । थैंक्यू । (अन्दर जाता है)

भूमि : अब कुछ ज़्यादा ही परेशान करने लगे हैं ।

आदर्श : कौन ? पापा ? हाँ ।

भूमि : एक बार किसी को फिर दिखा देते ।

आदर्श : हूँ ।

भूमि : अकेले कभी कभी डर लगने लगता है ।

आदर्श : वैसे करेंगे तो कुछ नहीं । और दिखाया भी किसे जाय । मेन्टल हास्पिटल वाले कहते हैं कि···अच्छा सुनो तुम्हें ठीक याद है उसने आज ही आने को कहा था ?

भूमि : किसने, फोटोग्राफर ने ? हाँ ।

आदर्श : हो सकता है । मुझे कुछ ऐसा याद पड़ता है···खैर हो सकता है देर से ही आए । भूमि अगर···

भूमि : क्या ?

आदर्श : कुछ नहीं । सोचता था तुम्हीं वहाँ चली जातीं ।

भूमि : आदर्श । (दुबारा आईने में देखकर मेकप ठीक करती है)···

आदर्श : हूं ।

भूमि : तुम कुछ उलझन में क्यों लग रहे हो ।

आदर्श : उलझन में ? नहीं तो । हाँ बस वो आ जाता तो अच्छा ही था । वैसे यह काम बुरा नहीं है और अब तो न जाने कितनी औरतें माडलिंग करने लगी हैं । वो तो स्टूडियो में फोटो खिचाती है । बहुत से फोटो तो बिना कपड़े पहने ही खिचाने पड़ जाते हैं । यह आदमी तो घर पर ही फोटो खींचेगा । मगर···

भूमि : मगर क्या ?

आदर्श : मेरा मतलब है···(बाहर देखकर) वहाँ इतनी भीड़ क्यों है ?

भूमि : होगी ।

आदर्श : काफी लोग जमा हैं जैसे वहाँ कुछ बँट रहा है । कुछ लोग तो आस पड़ोस के ही लगते हैं लेकिन कुछ कहीं और से भी आ गए लगते हैं । हाँ, मैं पूछ रहा था कि यह आदमी तुम्हें मिला कहाँ ?

भूमि : कौन ?

आदर्श : यही फोटोग्राफ़र ।

भूमि : लिपिस्टिक कम हो तो एक फायदा ज़रूर हो जाता है । धोके से उसके दाँतों पर लगने का डर नहीं रहता ।

आदर्श : हाँ । मैंने पूछा यह फोटोग्राफ़र मिला कहाँ तुम्हें ?

भूमि : मिलता कहाँ । यहीं आया था एक दिन । तुम···हाँ उसी दिन तो जिस दिन स्कूल मैनेजमेण्ट ने तुम्हें जवाब दे दिया था ।

आदर्श : स्कूल मैनेजमेण्ट ने ? स्कूल मैनेजमेण्ट ने जवाब दे दिया था । मैनेजमेण्ट क्या जवाब देता मुझे । मैं··· बल्कि सच बात यह है कि उनके पास टीचर रखने को पैसा ही नहीं था । वो क्या निकालेंगे मुझे । बल्कि सच तो यह है कि उनके यहाँ काना कुत्ता भी नौकरी करने नहीं जायेगा ।

[दरवाजे पर दस्तक]

आदर्श : भूमि शायद वो आ गया तुम्हारा फोटोग्राफ़र···

[भूमि दुबारा मेकप सँवारने लगती है । आदर्श दरवाजा खोलता है]

आदर्श : आइये । आइये । हम लोग आपका ही इन्तज़ार कर रहे थे ।

[पीछे पीछे कैमरा लटकाए पत्रकार आता है]

आदर्श : क्या हुआ, आपके साथ और भी कोई है ? भूमि, लो भई ये आ गए ।

[भूमि नमस्ते करती है । पत्रकार भी]

भूमि : बैठिए ।

आदर्श : जनाब मैं तो कह रहा था कि हम लोग खुद आपके स्टूडियो आ जाते ।

पत्रकार : जी ? (बाहर झांकता है)

आदर्श : आप बैठिए । बात ये है···वो···भूमि चाय···

भूमि : अँ···चाय ?

पत्रकार : चाय ? नहीं जी । थैंक्यू । (बाहर देखता है)

आदर्श : जी हां । यह मौसम भी तो चाय का नहीं है । जनाब क्या आपके साथ और भी कोई है ?

पत्रकार : जी हाँ ।

आदर्श : वेरी गुड । आप कष्ट मत कीजिए मैं बुला लेता हूं ।

[आदर्श आगे बढ़ता है तभी पुलिस अफसर अन्दर आता है]

पुलिस अफसर : ओ आप···हूँ ··

आदर्श : आप किसे खोज रहे हैं साहब ?

पुलिस अफसर : इस घर में आप रहते हैं ?

आदर्श : जी । मगर···

पुलिस अफसर : आपका नाम···ओहो पत्रकार साहब आप ऐडवांस में यहाँ पहुँच गए···

आदर्श : जी···बात ये है ··

पत्रकार : (पुलिस अफसर से) यार बोर हो गया हूँ उस बुड्ढे से । हद होती है । साला अपनी धाक जमा रहा है और परेड हमारी हो रही है ।

आदर्श : माफ कीजिएगा आप क्या फोटोग्राफ़र नहीं हैं ?

पत्रकार : यही बदकिस्मती है कि हूँ । तभी न परेड कर रहा हूं ।

पुलिस अफसर : मिस्टर, ये घर आपका है ?

आदर्श : जी ।

पुलिस अफसर : देखिए जनाब अभी मिनिस्टर साहब इधर आ रहे हैं···

आदर्श : मिनिस्टर साहब ?

पुलिस अफसर : हाँ शिवराज गंधे प्लानिंग मिनिस्टर । ज्यादा कुछ बोलना नहीं ।

आदर्श : जी हाँ । जी हाँ । मैं जानता हूं उनको । अच्छी तरह से । वो मिनिस्टर हैं । इतना समय भी कहाँ होता है । मैं ठीक कह रहा हूँ न···अरे भूमि··· अच्छा जनाब सुनिए, उन्हें इस टूटी-फूटी कुर्सी पर बैठाना ठीक नहीं है न···अरे भूमि तुम खड़ी हो··· अन्दर से वो चादर निकाल लो न···

पत्रकार : हाँ हाँ । निकालो । निकालो । बड़ा भाई मिनिस्टर छोटा भाई विरोधी दल का नेता···उसकी सरकार हारेगी तो इसकी आएगी···बिछाओ भई बिछाओ··· चादर···

[मिनिस्टर शिवराज गंधे और कुछ लोग अन्दर आते हैं]

आदर्श : नमस्कार जनाब । आइए, बैठिए ।

शिवराज गंधे : आपका नाम ?

आदर्श : जी, आदर्श। वो मेरी पत्नी है भूमि।

शिवराज गंधे : हूँ। गुड। हमारे देश में अभी इतना संस्कार है कि लोग अपना नाम इतना सुन्दर रखते हैं। देखिए आप लोग। इन्हें देखिए। आपका नाम बहुत अच्छा है। मुझे बहुत पसन्द आया। दरअस्ल मैं दौरे पर निकला हूँ। आप लोगों की हालत खुद जानना चाहता हूं।

आदर्श : जी हाँ। भूमि ''चाय ''ऐसे लोग भला कहाँ आते हैं और'''

शिवराज गंधे : तुम्हारे पास ये दो कमरे हैं ?

आदर्श : जी। एक स्टोर भी है। वैसे इतना काफी है''' फ़िर किराया भी ज्यादा नहीं है बस सिर्फ शाम को लोग अंगीठियाँ जलाकर धुआँ बहुत कर देते हैं। अच्छा सुनिए आप'''देखिए मेरा मतलब'''है ''वो

शिवराज गंधे : भई यहाँ फोटो लेना है ?

पत्रकार : ले लेता हूं।

आदर्श : भूमि तुम इधर आ जाओ। उधर उनकी फोटो खिंचेगी न।

शिवराज गंधे : नहीं'''नहीं आप लोग भी आइए। आप सब आ जाइए।

आदर्श : ओह। थैंक्यू। और मेरी पत्नी ने तो दरअस्ल''' अरे क्या फोटो खिंच भी गया ? ओह मैं समझा अभी आप रेडी कहेंगे। अच्छा जनाब आप ''मैं कह रहा था'''

शिवराज गंधे : तुम कही नौकरी करते हो ?

आदर्श : मैं वही तो कह रहा था'''

शिवराज गंधे : हूं। ठीक है। अच्छा'''

पुलिस अफसर : चलें अब ?

शिवराज गंधे : अँ ? हाँ। चलो। अच्छा'''अरे हाँ'''योर वाइफ़'''

[भूमि की ओर देखता है]

आदर्श : जी हाँ। मैंने अभी परिचय कराया था न। भूमि।

शिवराज गंधे : आप कहीं टीचर हैं ?

आदर्श : जी नहीं'''

शिवराज गंधे : इन्हें बोलने दो'''

भूमि : जी नहीं।

शिवराज गंधे : घर का काम देखती होंगी ?

भूमि : जी ''

शिवराज गंधे : वैसे अब नारियों को घर के बाहर आना चाहिए। नौकरी के बारे में इतने'''पिछड़े ख्याल नहीं रखना चाहिए।

आदर्श : नहीं नहीं। पिछड़े ख्याल नहीं है। बस कोई ठीक ठाक नौकरी मिली नहीं।

शिवराज गंधे : भूमि जी आप मिलिए। आप जैसों के लिए तो नौकरी की कमी नहीं है। मिलिएगा। नमस्कार।

आदर्श : नमस्कार।

[गंधे और पत्रकार आदि जाते हैं आदर्श दरवाजा बन्द करता है]

भूमि : तुम बार-बार चाय के लिए क्या कहने लगते थे ?

आदर्श : अँ ? ओह। फिर क्या हुआ। हाँ'''यह तो कहो गनीमत हुई इस बीच पापा नहीं आ टपके। कितना खराब लगता। सुनो, तुम क्या जाओगी उसके यहाँ ?

भूमि : कौन मैं ? कौन जायगा।

आदर्श : अरे फिर उसी वक्त क्यों नहीं इनकार कर दिया था ?

भूमि : उसी वक्त क्या इनकार कर देती ।

आदर्श : फिर ? जाना नहीं पड़ेगा ?

भूमि : चली जाऊँगी।

आदर्श : क्या ? चली जाओगी ? चली जाओगी का मतलब मालूम है ? इन भ्रष्ट लोगों के यहाँ जाने का मतलब क्या है ?

भूमि : चिढ़े जा रहे हो। ऐसा तो कोई एपाइन्टमेंट भी नहीं हुआ। यूँ ही बुलाया···यूँ ही जाने को कह दिया।

आदर्श : यह बात इतनी साधारण नहीं है. यू डोण्ट नो। उस आदमी को नहीं जानती। नाऊ यू हैव कमिटेड। इनकार करने का मतलब तुम्हें नहीं पता होगा। प्रधानमंत्री का चहेता मिनिस्टर है शिवराज गंधे और उसका छोटा भाई विरोधी दल का नेता है। इकतालीस कारखाने चलाता है और इक्यासी संस्थाएँ। नाऊ यू कैन नाट डेनाई। इनकार करना अब तुम्हारे हाथ में नहीं है। उसने तुम्हें बुलाया इसका मतलब है जाना होगा। और जाने का मतलब ? जाने का मतलब जानती हो ?

भूमि : हो सकता है कोई अच्छी नौकरी हो। तुम्हें भी तो नौकरी दे सकता है।

आदर्श : भूमि तुम बन रही हो या सचमुच ही नहीं जानतीं ?

भूमि : मैं तो अब ये कपड़े उतार रही हूं। अब तो वह आने से रहा।

आदर्श : मैंने जो कहा उसे टाल क्यों रही हो।

भूमि : टाल कहाँ रही हूँ।

आदर्श : तब तुम्हें मालूम है उसने क्यों बुलाया है ?

भूमि : क्यों बुलाया है ?

आदर्श : क्यों ? उन दर्जनों औरतों से पूछो जो ··। मगर अब फायदा क्या है यू हैव ऐक्सेप्टेड इट।

भूमि : क्या ऐक्सेप्ट कर लिया है।

आदर्श : जाना। और जाने का मतलब उस गिद्ध के बिस्तर पर सोना।

भूमि : क्या बात करते हो।

आदर्श : क्या बात करता हूँ ?

भूमि : जा ही कौन रहा है।

आदर्श : लेकिन अब न जाना तुम्हारे हाथ में नहीं है। नही जाओगी तो कोई बुलाने आ जाएगा फिर भी नहीं जाओगी तो पुलिस आएगी···

भूमि : हाँ। ऐसे मज़ाक है।

आदर्श : मज़ाक ? मज़ाक तो घटिया चीज़ होता है। न जाने पर यह भी मुमकिन हैं कि अचानक पुलिस घर पर छापा मारे और अखबार में छप जाय यहाँ वेश्यावृत्ति का अड्डा था।

भूमि : लेकिन···

आदर्श : क्या लेकिन ?

भूमि : क्या वो हर औरत इसीलिए बुलाता होगा ?

आदर्श : हाँ ! हर औरत। औरत सूँघने के लिए नहीं बुलाता।

भूमि : मैं जाऊँगी ही नहीं।

आदर्श : अरे अजब जहालत है। न जाने पर जबर्दस्ती बुलाएगा।

भूमि : ओफ्फोह फिर आखिर किया क्या जाय ? उसने खुद ही तो कहा था। मैं तो नही गई थी नौकरी के लिए कहने। और अगर ऐसा ही था तो तुम्हीं कह देते।

आदर्श : मैं ?···मैं ? भूमि यानी···तुम कहना क्या चाहती हो ? यह कि मैं कायर था इसलिए मैंने नहीं कहा।

भूमि : लेकिन अब उपाय क्या है।

आदर्श : उपाय ! हाँ उपाय ! क्या है। अब उपाय क्या है। बताऊँ उपाय ? ज़हर ले आता हूँ तुम भी खा लो, मैं भी खा लेता हूँ !

भूमि : ले आओ ! **(दोनों खामोश)**

आदर्श : तुम···तुम्हें यह बहुत अच्छा लगेगा ? **(खामोशी)** वैसे यह मत सोचो कि मैं अपने लिए कह रहा हूँ। और इस मुग़ालते में भी मत रहना कि किसी के साथ सोकर वह नौकरी दे ही देगा। **(खामोशी)** अपने आप अगर तुम्हें इसमें एतराज़ नहीं है तो मैं इसमें बाधा नही डालूँगा।

भूमि : ह्वाट डू यू मीन ? मतलब क्या है तुम्हारा ? मैं उसके साथ सोऊँगी इसका शौक है मुझे ?

आदर्श : मुझे गलत मत समझो लेकिन थोड़ा ठंढे दिमाग से···

भूमि : ठंडे दिमाग से ! क्या ठंडे दिमाग से ? आई शैल नाट गो। मुझे नहीं जाना है उसके यहाँ। जो भी होगा देखा जायगा।

आदर्श : जो भी होना है···तुम्हें भी मालूम है. और मुझे भी···जो कुछ होना है हम दोनों को मालूम है। मेरे पास नौकरी नहीं है। तुम्हारा फोटोग्राफ़र नहीं आया। कितने बरसों से लगातार वह इसी तरह इन्तज़ार करा रहा है। एक बार फ़िल्म का कैमरा मैन इसी तरह नहीं आया। दूसरी बार···फिर तीसरी बार···फिर चौथी बार···कितनी ही बार तुमने इसी तरह लोगों के आश्वासन पर इसी तरह तैयारियाँ कीं। हर बार लगा बस इस बार से रास्ता निकल आएगा। और जब तैयारी को रास्ता मिला···

भूमि : यानी तुम चाहते हो इस बार मैं मिनिस्टर के पास जाऊँ ?

आदर्श : पागल हो ! मैं क्या चाहता हूँ। अब क्या चाहूंगा। मुश्किल यह है कि आखिरी फैसला हम नहीं कर पाते। पता नहीं कहाँ क्या अटका रह जाता है।

भूमि : अटका क्या रह जाता है। मैं तैयार हूं। मैं नहीं जाऊँगी बस ! जो भी होगा देखा जायगा।

आदर्श : सिर्फ इतना कहने से काम चल जायेगा ? सोच लो।

भूमि : कुछ नहीं सोचना है अब ! **(खामोशी)**

आदर्श : मज़ा तो तब आता···

भूमि : कब ?

आदर्श : मज़ा आ जाता अगर वे तुम्हें लेने आते ओर खाली हाथ लौटते।

भूमि : खाली हाथ ? मतलब हम किसी और जगह चले जायें ?

आदर्श : किसी और जगह ? ऐसी कौन सी जगह है जहाँ उसका हाथ नहीं पहुँचता ? सोचो ज़रा किसी दूसरे शहर में पुलिस द्वारा पकड़ लिया जाना कितना घटिया होगा। और वह भी किसी छोटे से जुर्म में। और जुर्म भी नहीं सन्देह में।

[दरवाजे पर दस्तक]

भूमि : ओह फोटोग्राफ़र आ गया शायद

[आदर्श खामोशी के साथ दरवाजा खोलता है। बाहर पुलिस अधिकारी है। भूमि उसे सन्नाटे में देखती रह जाती है]

आदर्श : बैठिए ! कुर्सी बहुत अच्छी नहीं है···

पुलिस अधिकारी : नहीं बैठना नहीं है । मैडम से एक बात कहनी थी । मिनिस्टर साहब अभी दो रोज़ के लिए दूसरे शहर जा रहे हैं। आप वृहस्पतिवार को शाम सात बजे उनके बंगले पर आ जाइएगा।

[भूमि चुपचाप देखती रहती है]

जाइएगा ज़रूर ! मैं अब चलूँगा (बाकी बातें जैसे खुद उसका शरीर आँखों ही आँखों टटोलते हुए बोलता है) थोड़ी देर रुकता। चलते-चलते थक गया हूं। मिनिस्टर के साथ ड्यूटी बहुत मुश्किल होती है। तो भूलिएगा नहीं। थर्सडे, सात बजे शाम, बँगले पर। अच्छा एक गिलास पानी पिला देंगी ? (भूमि पानी लाने जाती है) चलते चलते प्यास लग जाती है। करें क्या साले नक्सलाइटों की वजह से काम बढ़ गया वरना ऐसा झंझट कम ही होता था। परसों एक उपमन्त्री के भाषण के बीच बम मार दिया ससुरों ने। (भूमि पानी लाती है) थैंक्यू। (पानी पीता है) चलूँगा। हां मिनिस्टर साहब से मिलने के बाद इस गरीब को मत भूल जाइएगा।

[पुलिस अधिकारी जाता है]

आदर्श : (दरवाजा बंद करते हुए) बृहस्पतिवार, सात बजे शाम बंगले पर। मिनिस्टर के साथ ड्यूटी बहुत मुश्किल होती है। थर्सडे शाम सात बजे बंगले पर। हाँ मिनिस्टर साहब से मिलने के बाद इस गरीब को मत भूल जाइएगा···

[भूमि रो पड़ती है। आदर्श यही वाक्य दुहराता, उसका चेहरा अपनी ओर घुमाता है···बोलता जाता है]

अँधेरा

□

दूसरा अंक

[वहीं ! भूमि किसी पेशेवर माडेल की तरह बूढ़े बाप से काल्पनिक कैमरे में तस्वीरें खिंचवा रही है]

बूढ़ा : थैंक्यू ! थैंक्यू ! बस···हाँ···इधर···नहीं इधर लाइट नहीं है···हाँ···ये पोज ठीक है···बस···रेडी··· थैंक्यू ! एक और···हाँ इधर से···तुम झरने में पैर डालकर बैठो···स्माइल···गुड।···थैंक्यू···हाँ··· ये फूल हाथ में ले लो···प्लीज···फूलों को (सहसा **हाथ पकड़ता है। भूमि हाथ छुड़ा लेती है**) प्लीज़··· स्माइल···हाँ···रेडी···थैंक्यू। थैंक्यू···वन मोर··· इधर···प्लीज···स्कर्ट घुटनों के ऊपर···येस···योर हैट···हाँ···हैट सीने पर येस···रेडी···थैंक्यू··· वन स्नैप मोर··· ओ हो रील ख़त्म हो गई। लोड कर लूँ। (**काल्पनिक कैमरा लोड करता है**) येस···रेडी··· नहीं हाथ ऊपर··· पीछे···गर्दन के पीछे···सीनाबाहर··· येस···रेडी थैंक्यू···हाँ उधर खिड़की के बाहर देखो ज़रा···चेहरा थोड़ा और तिरछा···स्माइल··· आँखें ऊपर···हाँ···येस···थैंक्यू···एक और···हाँ

इधर···उधर नहीं इधर···इधर···प्लीज़···

[**हाथ पकड़ता है भूमि भागती है। बूढ़ा भी भागता है। थककर गिरता है। आदर्श का प्रवेश**]

आदर्श : भूमि ! [**भूमि अपने को सँभालती है**]

बाप : एई, अलग हटो···येस वन स्नैप मोर···स्कर्ट अप···

आदर्श : (**सख्ती से**) पापा···अन्दर जाओ।

बाप : अं···म-मगर···वो···

आदर्श : अन्दर जाओ···

[**बूढ़ा घबरा कर अन्दर जाता है**]

भूमि : गोलियाँ मिल गईं ?

आदर्श : ये हो क्या रहा था ?

भूमि : कुछ नहीं ! पापा को अच्छा लगता है···मैंने सोचा···

आदर्श : क्या सोचा ?

भूमि : गोलियाँ मिल गईं ?

आदर्श : हाँ ! तीस हैं। पापा क्या कर रहे थे ?

भूमि : तुम्हारे मिनिस्टर से वे शायद ज़्यादा अच्छे हैं। मेरी तस्वीरें ले रहे थे।

आदर्श : लो गोलियाँ रखो। बिना डाक्टर के नुस्खे के दवाई वाला देने को ही राज़ी नहीं था।

भूमि : फिर कैसे दे दिया।

आदर्श : मेरी बढ़ी हुई दाढ़ी देखकर। वह डर गया। बोला बगैर नुस्खे के नहीं देता मगर आजकल किसी का भरोसा नहीं। बात बात में लोग बम मारने लग जाते हैं।

भूमि : क्या मतलब ?

आदर्श : मुझे नक्सलाइट समझ रहा था।

भूमि : नक्सलाइट नींद की गोली लेने जाता !

आदर्श : वो तो ठीक है लेकिन वह तो डर रहा था। कह रहा था कि अगले हफ़्ते सारे दूकानदार मिनिस्टर के पास जायँगे और पुलिस सुरक्षा की मांग करेंगे। सरकार सुरक्षा देगी भी। साला खाने का इन्तज़ाम हो न हो, नौकरियाँ मिलें न मिलें। दूकानदार की सुरक्षा सरकार ज़रूर करेगी। मारो गोली। लो ये गोलियाँ। सावधानी से रखना।

भूमि : सावधानी से ?

आदर्श : हाँ मेरा मतलब यह नहीं कि कोई धोके से खा लेगा। पर छोटी सी पुड़िया है खो भी सकती है।

[भूमि पुडिया ले लेती है]

आदर्श : आखिर हम किसी निर्णय पर पहुंचे। कहीं तो पहुंचे। मुझे तो ऐसा लगने लगा था जैसे हम बीच में ही लटके रहेंगे। बल्कि मैं रास्ते में सोच रहा था··· कल थर्सडे है। थर्सडे शाम सात बजे तुम बँगले पर नहीं पहुंचोगी। उसके बाद भी नहीं। फिर अचानक वह बेढंगा पुलिस अफसर आएगा। यहाँ आएगा और···

भूमि : (अचानक फूट पड़ती है) मुझे नहीं मरना। हमें नहीं मरना। हम नहीं मर सकते ! ···

आदर्श : (हँस पड़ता है) नहीं मरना है ? कैसे कह सकती हो ? क्या सुबूत है ? जीना किस तरह होगा यह बता दो तो मैं मान लूँगा। कैसे नहीं मरेंगे ? अचानक मृत्यु न सही धीरे-धीरे मरेंगे···सूख कर, ···धीरे-धीरे किसी सड़ते पत्ते की तरह गल कर।

बचा तो नहीं जा सकता। (अपने में हताश होकर टहलने लगता है) मुझे बताओ, मौत की तरफ कोई दूसरा मुझे धीरे-धीरे ले जाए, इससे खुद मर जाना क्यों नहीं बेहतर है ? तुमने वह कहानी सुनी होगी किसी को कैद करके एक ऐसी जगह डाल दिया गया था जहाँ छत से मौत का एक पेण्डुलम धीरे-धीरे उस पर उतरता आता था। बहुत धीरे-धीरे···लेकिन एक निश्चित गति से · पेण्डुलम···ठीक क्लाक के एक पेण्डुलम की तरह। एक अरसे से हम इस बेबस ज़िन्दगी पर मौत का वह पेण्डुलम उतरते देख रहे हैं। इस बेबसी से बेहतर है कि हम खुद उस पेण्डुलम को खीच कर अपने ऊपर ले लें। कम से कम, कम से कम कुछ करने का एहसास तो होगा !

[भूमि की ओर बढ़ता है]

आदर्श : देखो भूमि·· ये स्लीपिंग पिल्स। नींद की गोलियाँ··· हमारा फैसला। नींद की गोलियाँ नकली नींद लाती हैं, लेकिन मौत असली ही लाती है। सब कुछ नकली हो सकता है···चेहरे, आदमी, ज़िन्दगी लेकिन मौत नकली नहीं होती। ओह, मैं भी कैसी बेहुदा बातें कर रहा हूँ। इसी को कहते हैं पलायन, असलियत को झुठलाना। सुनो पुड़िया मुझे देना। (पुड़िया लेकर पिल्स गिनता है) दो-चार-छह-दस। दो-दो-चार, दो-छह-आठ-दस·· और ये छह-आठ दस···तीस गोलियाँ। मेरे लिए, तुम्हारे लिए, और पापा के लिए ये बाकी दस···

भूमि: पापा ? पापा के लिए भी ?

आदर्श : फिर क्या ?

भूमि : लेकिन पापा इस तरह न मरें तो भी क्या बिगड़ेगा ?

आदर्श : कुछ नहीं बिगड़ेगा ! कल सिर्फ वही बचेगा और तुम चाहती हो कि वह बचे तो सिर्फ इस यादगार के रूप में कि उसके बेटे और बहू ने जहर खा लिया था ? और इसके बाद लोग उस बूढ़े को इस तरह देखें गोया वह हमारा प्रेत हो ! मैं नहीं चाहता भूमि। मैं नहीं चाहता कि हमारे बाद हमारी यह बूढ़ी पागल यादगार बचे।

भूमि : (परेशान होकर) समझ में नहीं आता क्या किया जाय !

आदर्श : यानी ? इतना सब तय हो चुकने के बाद ? देखो भूमि, सभी मृत्युओं में अधम मृत्यु होती है आत्महत्या। और इस आत्महत्या के साथ एक हत्या भी जुड़ी है। और क्या ? पापा की तो हत्या ही कही जायगी क्योंकि हमें तो मालूम है लेकिन उन्हें हम अनजाने ही जहर दे रहे हैं। लेकिन मन से मैं जानता हूँ, तुम भी जानती हो···कि हम···

भूमि : मेरा सिर चकरा रहा है।

आदर्श : भूमि···

भूमि : सुनो···थोड़ा सा···मेरा मतलब है···मेरा मतलब है ···शायद···

आदर्श : (चीख कर) बकवास है। सब बकवास है। इसी शायद के पीछे इतना सब कुछ सहा है। भूमि, यह ज़लालत···उफ्

भूमि : मेरा मतलब है···मेरा मतलब है···

आदर्श : क्या ? क्या मतलब ? क्या मतलब है आखिर ? क्या हो जायगा और इन्तजार में ?

[भूमि उलझन में पड़ जाती है। आदर्श उसके करीब आता है]

आदर्श : भूमि···

[बाहर दरवाज़े पर दस्तक]

आदर्श : अब कौन आ गया ? (भूमि साड़ी से मुंह पोंछती है आदर्श हँसता हैं) तुम क्या समझ रही हो फोटोग्राफ़र आ गया ? हो सकता है पुलिस अफसर हो। मिनिस्टर लौट आया हो और···

भूमि : मत खोलो···

[दरवाज़े पर दस्तक]

आदर्श : मगर···

भूमि : नहीं भड़भड़ाने दो। समझेगा लोग घर में नहीं हैं।

आदर्श : हाँ जी घर में नहीं हैं और घर अन्दर से बन्द है। (दरवाजा खोलता है। युवक को देखकर) कहिए।

युवक : जी मैं मुर्दुमशुमारी के लिए आया हूं।

आदर्श : मर्दुमशुमारी। बैठिए।

युवक : (भूमि से) नमस्कार जी आप बैठिए न। मैंने डिस्टर्ब कर दिया।

आदर्श : आप बैठिए।

[युवक बैठकर फाइल खोलता है]

युवक : बस थोड़ा सा समय लूंगा ज़्यादा सवाल नहीं हैं। आपके यहाँ कितने सदस्य हैं ?

आदर्श : फिलहाल तीन।

युवक : फिलहाल ? यानी···

आदर्श : मुमकिन है कि कल यहाँ तीन में से एक भी न मिले।

युवक : अच्छा उसे छोड़िए। आपका धर्म ?

आदर्श : मरजीवा।

युवक : (लिखता है) म···र···जी···वा···अच्छा ! धर्म मरजीवा । मगर माफ़ कीजिएगा साहब, यह कौन सा धर्म है ?

आदर्श : और कुछ पूछना है ?

युवक : जी, आप घर में कितने लोग हैं ?

आदर्श : आप यह सवाल पूछ चुके हैं । फिलहाल तीन हैं ।

युवक : फिलहाल ? यानी···चौथा आने वाला है ?

आदर्श : नहीं बाकी तीन भी जाने वाले हैं ।

युवक : (लिख लेता है) आपकी फेमिली में कितने लोग कमाते हैं ?

आदर्श : कोई नहीं ।

युवक : (लिखता है) कोई नहीं । अच्छा तो मासिक आमदनी कितनी है ?

आदर्श : कुछ नहीं ।

युवक : (लिखता है) माहवार आमदनी कुछ नहीं । और इन्कम टैक्स ?

आदर्श : आप अजीब आदमी है ? पहले बता चुका हूँ कि हमारी फेमिली में कोई कमाने वाला नहीं है । फिर यह भी बता चुका हूँ कि मासिक आमदनी कुछ नहीं है । जाहिर है कि इन्कमटैक्स का सवाल ही नहीं उठता ।

युवक : जी हाँ 'जी हाँ'···वो तो ठीक है । मगर मुझे तो इस कागज़ पर बनाए गए खानों में सभी बातें लिखनी होती हैं न ।

आदर्श : जी हाँ । लिखिए लिखिए । जरूर लिखिए ।

युवक : आपकी मातृभाषा ?

आदर्श : मातृभाषा । हाँ मातृभाषा । लिखना जरूरी है ?

हथियार होती है । लेकिन डरपोक हूँ । कुछ भी लिख लीजिए ।

[युवक फाइल सहसा बन्द कर देता है]

युवक : एक बात पूछूँ···लेकिन, लेकिन आपका भरोसा क्या है । चलिए फ़ार्म भरवा दीजिए ।

[फाइल दुबारा खोलता है]

आदर्श : आप कुछ पूछते पूछते रुक गए । क्यों ?

युवक : कुछ नहीं । आपकी शिक्षा ?

आदर्श : एम०ए० ।

युवक : पत्नी ?

आदर्श : ग्रेजुएट । बाप पागल है ।

युवक : आप एम०ए०, पत्नी ग्रेजुएट और आप वेकार हैं । गुड । डू यू नो···मेरा मतलब है···सुनिए आपने कहा आप डरपोक हैं । क्या आप बहुत ज़्यादा डरते हैं ?

आदर्श : मतलब ?···शायद ।

युवक : किनसे ?

आदर्श : छोड़िए । अपना फ़ार्म भर लीजिए ।

युवक : देखिए जनाब आप अगर इजाज़त दें तो कुछ कहूँ ।

आदर्श : कहिए ।

युवक : आप हमारा साथ क्यों नहीं देते ?

आदर्श : मतलब ?

युवक : शायद आप नहीं जानते । मैंने दो साल पहले एम० ए० कर लिया था फिर पी०एच०डी० कर रहा था लेकिन बाद में मैंने सोचा···जनाब आप ही बताइए ···व्हाट इज़ द यूस ? होगा क्या ?

आदर्श : मर्दुमशुमारी से क्या होगा ?

युवक : ये तो खाली था···काम ले लिया । न लेता तो

उनको क्या फ़र्क पड़ता। फिर कुछ लोगों से मिल रहा हूँ। यह सबसे बड़ा काम है···फायदा हो रहा है। लोग क्या सोचते हैं, लोगों की हालत क्या है··· देखिए मैडम, एक गिलास पानी पिला देंगी ?

[भूमि अन्दर जाती है]

युवक : आप···आपके पोलिटिकल व्यूज़ क्या हैं ? मतलब और किसकी तरफ हैं ?

आदर्श : मैं ? पता नहीं।

युवक : यही गलत बात है। देखिए अगर आप बुरा न मानें तो हम लोग हर इतवार को एक छोटी सी मीटिंग करते हैं उसमें आइए।

[भूमि पानी लाकर देती है]

आदर्श : क्या होता है उस मीटिंग में ?

युवक : वी डिस्कस। हम बहसें करते हैं। आज की समस्याओं पर। आएंगे ?

आदर्श : क्या होगा उससे।

युवक : मिडिल क्लास हिपाक्रेसी।

आदर्श : और कोई सवाल पूछना है ?

युवक : आपकी उम्र।

आदर्श : पैंतीस साल।

युवक : मैडम की उम्र ?

आदर्श : अट्ठाइस

युवक : पिता जी की उम्र ?

आदर्श : साठ साल।

युवक : थैंक्यू। आप आना चाहें तो ईवनिंग कालेज हास्टल के कमरा नंबर छब्बीस में आ सकते हैं।

आदर्श : थैंक्यू।

[युवक जाता है। आदर्श दरवाज़ा बन्द करता है]

भूमि : सुनो, क्या ऐसा नहीं हो सकता···

आदर्श : कैसा ?

[दरवाज़े पर दस्तक]

भूमि : फिर कोई आया है ?

[आदर्श दरवाज़ा खोलता है वही युवक वापस आया है]

युवक : देखिए मेरा बैग तो यहाँ नहीं छूटा ?

आदर्श : यहाँ तो कहीं है नहीं वैसे देख लीजिए···

युवक : मुझे तो यही लगा कि मैं आपके ही यहाँ भूल गया। कमाल है। उसमें···न मिला तो झंझट हो जायगा।

आदर्श : क्या था उसमें ?

युवक : किताबें। वैसे तो खास नहीं है लेकिन पुलिस का कोई भरोसा नहीं किस किताब के लिए पकड़ ले। ठीक है साहब, शायद दूसरे घर में भूल आया होऊँ। उधर भी देख लूँगा। तकलीफ़ के लिए माफ करिएगा।

[जाता है। आदर्श दरवाज़ा बन्द करके लौटता है]

आदर्श : पागल है साला। समझता है लोग बेवकूफ़ हैं।

भूमि : क्या मतलब ?

आदर्श : थैले के नाम पर तुम्हें देखने आया था।

भूमि : कोई और वक्त होता तो शायद मज़ाक अच्छा लगता।

आदर्श : सॉरी (खामोशी) भूमि तुम कुछ सोच रही हो ?

भूमि : नहीं।

आदर्श : मैं सोच रहा था। तुम गोलियाँ न खातीं तो ठीक रहता शायद। मतलब मुझे लगता है कि अपने साथ तुम्हें भी खुदकशी के लिए···

भूमि : यह सब कहना बहुत जरूरी है क्या ?

आदर्श : अच्छा एक बात देखो, वी हैव डिसाइडेड इट, है न, लेकिन पूरी तरह यक़ीन क्यों नहीं हो रहा ? (खामोशी) वैसे सोचता था···खुदकशी करने से पहले कैसे आदमी तनाव की स्थिति में हो जाता होगा··· पर वह तनाव

[बूढ़ा अचानक अन्दर आता है]

बूढ़ा : हलो सर। हलो। हाउ डू यू डू मैडम। मैंने उस दिन स्नैप्स लिए थे, याद है। बहुत बढ़िया आए हैं। टाप क्लास। एक दम बढ़िया। देखेंगी आप···यू मिस्टर आप।

आदर्श : पापा !

भूमि : (पीछे से आदर्श को खींचकर) रहने दो···

आदर्श : अँ ?

बाप : येस येस। शी इन्टेलिजेण्ट। मैडम योर स्नैप आई टेक। सी···सी योरसेल्फ···दिस···दिस योर हसवेण्ड ···येस सर···आल ब्यूटी। टाप क्लास देखिए···ये देखिए···

[काल्पनिक फोटो दिखाता है भूमि कुछ याद करके अन्दर जाती है]

बाप : यू लाइक सर, माई आर्ट। शी ब्यूटिफुल। ये देखिए सर, टापलेस हर ब्रेस्ट ब्यूटीफुल···सीना अच्छा है। और सी दिस···

[भूमि आती है। ग्लास में पानी। बातें सुनती जाती है और गोलियाँ खाती है]

आदर्श : भूमि लेकिन···भूमि तुमने···

बाप : सर···यू सर···सी दिस वन टापलेस···

आदर्श : पापा !

भूमि : मत करो आदर्श, बोल लेने दो···

बाप : हाँ ! हाँ ! शी लाइक···यू लाइक मैडम···सी··· आपका टापलेस फर्स्टक्लास···(काल्पनिक फोटो दिखाता है) देखिए···येस···येस···ब्यूटीफुल···न ? आपकी छातियाँ···टापक्लास···सी लाइटशेड···

आदर्श : (चीखकर) पापा। (नींद की गोलियां छीनकर) पापा···खालो···

बाप : अँ ?

आदर्श : इन्हें खा लो···ये गोलियाँ खा लो ! भूमि पानी दो···

बाप : अँ···नई···अँ···

आदर्श : मुँह खोलो···खोलो मुँह···

[बूढ़ा मुंह खोलता है। आदर्श गोलियाँ डालकर पानी उड़ेल देता है]

आदर्श : जाओ अब सो जाओ।

बाप : माई···माई स्नैप्स···

आदर्श : पापा···अन्दर जाओ···जाओ···(बूढ़ा अन्दर जाता है) भूमि तुमने अचानक गोलियाँ खा लीं···मगर···

[अन्दर जाकर पानी लाता है और गोलियाँ खाता है। भूमि हँसती है।]

आदर्श : क्यों, हँसीं क्यों ?

भूमि : ऐसे सामने खाने की क्या जरूरत थी ?

आदर्श : क्या मतलब मैं सामने इसलिए खा रहा हूं कि तुम मुझे मना करो ?

भूमि : छोड़ो। कितनी देर में इनका असर होता है ?

आदर्श : असर तो जल्दी ही हो जाता है। यों समझो, नींद आएगी, पलकों में भारीपन होगा, हाथ-पैरों में थका-

वट होगी और फिर नींद आते ही जहर अपना काम करेगा।

भूमि : इसमें इतना जहर होता है ?

आदर्श : फिर क्या ? कितने ही आदमी यही ज़हर खाकर मर चुके हैं। उस फिलासफर की याद नहीं है जो जेब में स्लीपिंग पिल्स की शीशी रखता था और फलसफे पर बहसें किया करता था। और एक रात वही किसी दरख्त के नीचे मरा हुआ पाया गया।

भूमि : उसका एक मोज़ा हमारे यहाँ पड़ा होगा।

आदर्श : मोजा ? हुंह। अपने पीछे वह एक जुराब के अलावा और छोड़ भी क्या जाता इस दुनिया में ? हम क्या छोड़ जायेंगे ? उसे फेंक क्यों नहीं दिया ?

भूमि : छूने की तबियत नहीं करती···अह···(सिर पर हाथ फेरती है)

आदर्श : क्यों क्या है ? कुछ महसूस हो रहा है ?

भूमि : नहीं···ऐसे ही···

आदर्श : मैं सोचता था भूमि एक बार सोने के बाद शायद यह हमारी आखिरी ही नींद होगी। लगता है जितनी ज़्यादा से ज़्यादा देर जागा जा सके, हम जागते रहें। **(भूमि चुप रहती है)** क्यों ? चुप क्यों हो ? कुछ बातें करो न भूमि ! तुम खामोश क्यों हो गई ?

भूमि : बोला क्या जाय ? कुछ समझ में ही नहीं आता ! हाँ यही हो सकता है कि हम यह याद करें कि कैसे हम कालेज में मिले, कैसे शादी हुई और फिर कैसे आज ज़हर खाया ! इससे फायदा ?

आदर्श : तुम्हारी बात भी सही हो सकती हैं। ज़िन्दगी की··· जिस ज़िन्दगी की समूची कहानी आज, यहाँ···नींद

की इन चन्द गोलियों के साथ खत्म होती हो उसकी बात ही क्या की जाय ? **(टहलता है)** लेकिन··· लेकिन फिर जब तक नींद न आए तब तक किया क्या जाय ? क्या किया जाय ? **(भूमि फिर हथेलियों में माथा टिका लेती है)** भूमि, क्या तुम्हें नींद आने लगी ? क्या तुम सोने लगीं ?

भूमि : **(सिर उठाकर)** नहीं !

आदर्श : **(फिर टहलने लगता है)** मुझे भी नींद नहीं आ रही है।

भूमि : सुनो। **(आदर्श रुककर उसे देखता है)** पता नहीं क्यों··· आज लगता है कि हमें कुछ वो बातें करनी चाहिए जो हम कभी नहीं कर पाए।

आदर्श : ऐसा कुछ है क्या ? मुझे तो नहीं लगता !

भूमि : शायद ! लेकिन मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया। कभी धोखा नहीं दिया !

आदर्श : इस वक्त इसका अफसोस करना चाहिए क्या ?

भूमि : क्यों नहीं दिया ? अजीब बात नहीं लगती ?···हर चीज़ थी···सब कुछ था···सभी कुछ था···मुझे याद है··बोटेनिक गार्डेन्स की बात है। मैं नहीं जानती···शायद मैं भी उसे चाहती थी। वह खूबसूरत था, अमीर था···मुझे चाहता भी था···उसने मुझसे कुछ माँगा था उस दिन···

आदर्श : खूबसूरत था···अमीर था ? लेकिन तुमने बताया था कि वह वही सुकरात जैसा बदसूरत और मुफ़लिस फिलासफर था···

भूमि : मुफलिस फिलासफर ? शायद वही रहा हो···लेकिन उससे फर्क क्या पड़ता है ?

आदर्श : हाँ फर्क तो कोई नहीं पड़ता है !

भूमि : मुझे याद आ गया। ''बात सचमुच उसी की है''' बल्कि उसी दिन वह घटना भी हुई थी एक गुण्डे ने मुझे तंग करना चाहा था ''

आदर्श : तुम्हें नींद आ रही है शायद। तुमने ही एक बार बताया था कि वह गुण्डा अक्सर तुम्हारा पीछा करता रहता था और फिर तुम्हीं ने एक बार जानना चाहा था कि वह जो कुछ चाहता है सीधे मांग ले, इस तरह पीछा क्यों करता है ?

भूमि : मुमकिन है'''मुमकिन है, शायद यही रहा हो, लेकिन फिर'''

आदर्श : भूमि जानती हो, कभी कभी किसी चीज का इस्तेमाल इतनी तरह से होने लगता है कि हम भूल जाते हैं कि उसका असली इस्तेमाल क्या था ? तुम्हारी बातें सुनकर मुझे ऐसा ही लगता है।

भूमि : मुझे भी ऐसा ही लगता है। समझ में नहीं आता कि हुआ क्या था ? या फिर कुछ हुआ भी था या नहीं। सच कहूं आदर्श, अगर अब आज, इस वक्त कुछ कान्फेस करना हो तो सिर्फ यही कहा जा सकता कि जो कुछ सच था वह इतनी बार बोला गया कि सब झूठ हो गया'''सिर्फ झूठ !

आदर्श : तो फिर आओ, हम उसका इकबाल करें जो हमने सचमुच किया हो

भूमि : सचमुच किया हो ? फिर तो इकबाल सिर्फ यही कर सकते हैं कि मैंने झूठ बोला था सिर्फ झूठ !

आदर्श : (खोखली हँसी के साथ) झूठ ? भूमि तुमने झूठ भी नहीं बोला था लेकिन चाहो तो माना जा सकता है, हर्ज ही क्या है ? कितनी ही बार हमने कान्फेस किया है ''कितनी ही बार ऐसे अपराधों का इकबाल करना चाहा है जो हमने किए ही नहीं। भूमि हमारा सबसे बड़ा अपराध तो यही है कि हमने कुछ नहीं किया'''एक छोटा सा झूठ भी ठीक तरह से नहीं बोल सके'''हम पर हमेशा एक नपुँसकता हावी रही है'''एक बौद्धिक नपंसकता ''

भूमि : लेकिन यह झूठ नहीं हैं !

आदर्श : क्या ? क्या झूठ नहीं है ?

भूमि : मैं कह रही हूँ कि यह झूठ नहीं है। एक दिन यहीं'''बैठे बैठे उसने मुझसे तमाम बातें की थीं''' मेरा यह हाथ उसने अपनी हथेलियां में ले लिया था (अपना बायां हाथ दूसरे हाथ में लेती है फिर अचानक बायाँ हाथ छोड़ कर दायाँ हाथ दूसरी हथेली में ले लेती है) नहीं ये हाथ था''' (अचानक हथेली टटोलने से ही जैसे उसे जहर की बात याद आ जाती है) लेकिन फिर'''फिर'''इसका असर क्यों नहीं होता ? क्यों नहीं होता असर ? क्यों नहीं होता ?

आदर्श : (जैसे अपराधी महसूस करते हुए) होगा असर। असर होगा !'''

भूमि : तुम झूठ बोलते हो'''तुमने धोका दिया है मुझे''' इसमें जहर नहीं है'''इसमें नहीं है जहर'''इसमें कुछ नहीं है तुमने धोखा दिया है'''ओह'''मुझे चक्कर आ रहा है'''

आदर्श : चक्कर आ रहा है ? पलायन ! एस्केप ! मैं जानता हूं, हम इस बौद्धिक नपुंसकता का सामना नहीं कर पाते इसीलिए हमें चक्कर आने लगता है।

भूमि : (बेचैनी से) मेरी पलकें भारी हो रही हैं···मुझे धुंधला दीख रहा है···

आदर्श : (चिढ़कर) यह झूठ है ! यह झूठ है। सब पलायन है। एस्केप है···

[धीरे-धीरे अँधेरा]

□

तीसरा अंक

[स्थान वही। समय उससे कई घंटे बाद। आदर्श और भूमि उसी वेश में : धीरे धीरे उजाला होता है। आदर्श घुटनों के सहारे लड़खड़ाता हुआ उठता है और फिर उसी पर गिरकर अचेत हो जाता है। फिर अचानक जैसे उसे अपनी स्थिति का बोध होने लगता है। वह पहले तो अपने शरीर को टटोलता है और फिर धीरे धीरे, बहुत आहिस्ता से बोलता है और फिर चीख पड़ता है।]

आदर्श : हम नहीं मरे···हम नहीं मरे···भूमि हम नहीं मरे··· (चीखकर) हम नहीं मरे···(भूमि के शरीर में हरकत होती है वह चौंककर करवट बदलती है) उठो नहीं भूमि···उठो नहीं गिर जाओगी···

भूमि : (होश में आने पर दरवाजे की ओर देखती है) पापा?

आदर्श : पापा ? देखता हूं !

[आदर्श अन्दर की ओर लड़खड़ाता हुआ जाता है और थोड़ी देर बाद उसी तरह लौटता है]

आदर्श : नाड़ी तो शायद नहीं चल रही है लेकिन शरीर अभी

गर्म है। अब क्या होगा भूमि ? अब क्या होगा ? मुझे नहीं मालूम था कि ज़हर भी नकली होगा···

भूमि : (निराश हो उठती है) अच्छी तरह लिटाया है उन्हें ?

आदर्श : अच्छी तरह ? हाँ, ठीक ही है···

भूमि : मैं देखकर आती हूं (धीरे-धीरे उठने की कोशिश करती है)

आदर्श : भूमि क्या करती हो ? वो ठीक हैं। (खामोशी छाई रहती है)

भूमि : अब···अब क्या होगा ? अब क्या होगा ?

आदर्श : क्या होगा ? कुछ नहीं जानता···क्या होगा। समझ में नहीं आता। मगर मैं फिर वह कलेण्डर वहाँ नहीं लगाना चाहता।

भूमि : मगर अब तो हमारी और भी बुरी हालत हो गई।

आदर्श : मरे तो फिर भी नहीं न !

भूमि : मगर पापा···पापा शायद···

आदर्श : वह बूढ़ा भी नहीं मरेगा। मैं जानता हूं वह भी नहीं मरेगा।

भूमि : अब तो उन्हें डाक्टर के यहाँ भी नहीं ले जा सकते। वह पूछेगा कि इसको ज़हर कैसे दिया गया, तब ? पुलिस ज़रूर मामले में गड़बड़ करेगी।

आदर्श : पुलिस तो वैसे भी ज़रा-सा भी संदेह होने पर परेशान करेगी। आखिर उसको जलाने के लिए सर्टिफिकेट जो चाहिए ! जीने की तो कोई शर्त नहीं होती मगर मौत सार्टिफाई जो होनी चाहिए !

भूमि : मगर वो···वो बच भी तो सकते हैं···

आदर्श : बच सकते हैं···हाँ बच सकते हैं ! बच सकते हैं ! (खामोशी)···लेकिन···(खामोशी) वैसे अभी जैसी

हालत है उससे नहीं लगता कि वह बच सकेगा।

भूमि : लेकिन फिर भी समस्या तो रहेगी ही !

आदर्श : हाँ। शायद। मगर सुनो, यह भी हो सकता है कि हम लोग अपने जुर्मों का इकबाल कर लें···

भूमि : तो क्या इससे हमें फांसी मिल जायगी ?

आदर्श : फांसी ? फांसी तो शायद नहीं ही मिले · मिल भी सकती है। आजन्म कैद भी हो सकती है। या फिर दो में से किसी एक को फांसी और दूसरे को कैद हो सकती है।

भूमि : लेकिन अगर हम बचाव न करें···दोनों फांसी की मांग करें ?

आदर्श : (दो क्षण रुककर) तब शायद फांसी भी न दें, कैद भी न दें बस सिर्फ हमें किसी पागलखाने में भेज दें !

भूमि : कल्पना बुरी नहीं है। पागल खाने में जिन्दगी गुजारते हुए दो ऐसे लोग जो पागल नहीं हैं ··कैसा अजीब लगता है।

आदर्श : (सहसा हँस पड़ता है) मुझे भी लगता है ! लेकिन सिर्फ इसीलिए लगता है कि हम समझ रहे हैं कि हम पागल नहीं हैं। कौन जाने हम पागलखाने में रहने वालों से ज्यादा पागल हों।

[दरवाजे पर दस्तक। दोनों चुप। फिर दस्तक]

भूमि : हे भगवान, कहीं···

आदर्श : हाँ इस बार तुम्हारी शंका सही हो सकती है। फोटोग्राफ़र हो सकता है। इट बिल बि ए सीन। मरते वक्त किसी माडेल की तस्वीरें···(फिर दस्तक)

[आदर्श दरवाज़ा खोलता है आए व्यक्ति के हाथ में बाल्टी और पिचकारी है ।]

व्यक्ति : आपके यहाँ कोई चूहा तो नहीं मरा ?

भूमि : चूहा ?

व्यक्ति : बात यह है साहब कि इस गली में कई चूहे मरे पाए गए ।

आदर्श : कितने खुशनसीब हैं ··

व्यक्ति : कौन ?

आदर्श : चूहे !

व्यक्ति : खुशनसीब ? लानत भेजिए बेहूदा चीज़ होता है यह जानवर ! मुझे तो नफरत होती है···खासकर मरे चूहे से । खैर हम दवा छिड़क देते हैं। चूहे होंगे तो मर ही जायेंगे । मगर साहब आप मेरे आने से घबराए नहीं ?

आदर्श : क्यों ?

व्यक्ति : क्यों क्या लोग डरते हैं ।

आदर्श : किससे चूहे से ?

व्यक्ति : नहीं जनाब, उन बदमाशों से । अजीब लोग हैं साहब । जिसका चाहे मर्डर कर देते हैं ।

आदर्श : कौन ?

व्यक्ति : कौन नक्सलाइट साले, और कौन । लोग तो डर के मारे दरवाजा नहीं खोलते । अभी ससुरों ने कपड़ा मिल के दोनों मालिक जान से मार दिए। अजी साहब क्या जमाना है ।

आदर्श : क्यों मार दिया ?

व्यक्ति : कौन जाने दोनों सेठियों का तो बम मारकर कचूमर

निकाल दिया । कुछ लोग कहते हैं कि यह राजनीति का मामला है

आदर्श : राजनीति का मामला ?

व्यक्ति : हां लोग कहते हैं । भगवान जाने सचाई क्या है ? लेकिन साहब, कितनी अजीब बात है···न दोस्ती, न दुश्मनी, न जाने कहाँ से कौन आता है और हत्या करके चला जाता है । हर आदमी एक दूसरे पर संदेह करता है एक दूसरे को शक की निगाह से देखता है।··· हर कोई एक दूसरे को खूनी समझता हैं···अजीब खौफनाक जमाना है ।

आदर्श : कौन लोग हैं ये ?

व्यक्ति : यही मालूम होता तो पकड़ ही न लिये जाते ! खैर साहब दवा डाल दें ··कहाँ डालनी होगी दवा ?

आदर्श : उधर उस कमरे में (आदर्श उस कमरे की और इशारा करता है जिसमें उसका बाप सोया है)

व्यक्ति : इसका दरवाजा खोल दीजिए···

आदर्श : दरवाज़ा खोलने की क्या जरूरत है । आपको काम करना है आप दराज से नली डालकर दवा छिड़क दीजिए ।

व्यक्ति : ऐसा ही सही ।

[वह पम्प की नली अन्दर की ओर करके पम्प चलाता है]

आदर्श : यह दवा ज़हरीली होगी ?

व्यक्ति : बहुत जहरीली जनाब ।

भूमि : आदमी पर भी इसका असर होता है ?

व्यक्ति : और क्या ? बहुत जहरीली होती है ।

[भूमि अचानक उसे रोकने चलती है]

भूमि : ठहरो···ठहर जाओ···बहुत हो गया···

[आदर्श उसे रोक लेता है]

आदर्श : आप अपना काम कीजिए। तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है भूमि तुम बैठ जाओ···(**व्यक्ति से**) हाँ तो जनाब, ये हत्यारे पकड़े नहीं गये ?

व्यक्ति : पकड़े कैसे जायँगे साहब ? और मान लो पकड़े भी गये तो गवाहियाँ कहाँ मिलेंगी ? कभी किसी को सामने खड़ा करके तो खून करते नहीं हैं ? (**अपना काम खत्म करता है**) अच्छा जनाब, आप को बहुत बहुत धन्यवाद।

[अपना सामान उठाकर जाता है। भूमि उसे जाते हुए देखती है और फिर कमरे की ओर देखती है]

आदर्श : भूमि सुनो···मेरी एक बात मानोगी ?

भूमि : (**उसकी ओर ध्यान दिए बिना ही**) वो···वो··· शायद कराहे हैं···

आदर्श : तुम्हें वहम हुआ है।

भूमि : वो कराहे हैं। मुझे धोखा नहीं हो सकता।

आदर्श : मगर इस बार हुआ है। अब होने लगा है। किसी और की भी कराह हो सकती है !

भूमि : (**निराश हो जाती है**) शायद तुम्हारी ही बात सही हो···लेकिन फिर कम से कम एक बार देखना तो चाहिए···

आदर्श : पागल मत बनो भूमि। हमारे न देखने से वह और ज़्यादा नहीं मर जायगा। और फिर सीधी सी बात यह है कि अगर हम उसे देखेंगे तो हमें दुख होगा···

ज़रूर दुख होगा। फिर हम उन्हें ऐसा मौका क्यों दें ? उनकी वजह से हम उसे जिन्दा नहीं रख सके, अब उनकी वजह से इसके जिन्दा न रहने पर हम रोए क्यों ? क्यों रोएं ?

भूमि : लेकिन यह कौन कहता है कि हम रोएंगे तो उनकी वजह से ?

आदर्श : और फिर किसकी वजह से ? हमारी वजह से ? पर हमारी इच्छा तो नहीं थी कि वह मर जाय। हम नहीं रोएंगे भूमि, हम नहीं रोएंगे। देखा नहीं तुमने, वे लोग गली-मुहल्लों में दवाएं छिड़कते फिर रहे हैं ताकि चूहे मर जायं और आदमी जिन्दा रहें और आदमी जिन्दा रहे ताकि रोए ? और वे सब सुनें जिन्होंने ··जिन्होंने ··भूमि हम नहीं रोएंगे। हम नहीं रोएंगे। हम नहीं रोएंगे ··

[अचानक कहते कहते रूलाई फूट पड़ती है]

भूमि : आदर्श ! (**आदर्श जवाब नहीं देता, रोता रहता है**) आदर्श, अगर इस तरह रोना ही तो था वो सब बातें क्यों की थीं ?

[आदर्श धीरे धीरे चुप हो जाता है]

भूमि : सुनो, अब करना क्या है ? (**आदर्श जवाब नहीं देता**) ऐसे तो बैठे नहीं रह सकते। कुछ करना ही होगा न।

आदर्श : हाँ।

भूमि : मगर क्या ?

आदर्श : आत्म हत्या।

भूमि : आत्म हत्या ? मगर कैसे ? तुम्हें ताज्जुब नहीं होता कि आत्महत्या के साधन कितने थोड़े हैं। जहर खा

लेना, आग लगा लेना, फाँसी लगा लेना, और बस ···

आदर्श : हाँ। बस।

[अचानक खामोशी छा जाती है]

आदर्श : सुनो भूमि, तुमने कभी बताया था कि वह मुफ्लिस फिलासफर तुम्हें बहुत चाहता था। उसने तुमसे कभी शादी भी करनी चाही थी। लेकिन तुमने इनकार कर दिया था।

भूमि : (सिर ऊँचा करके) हाँ।

आदर्श : छोड़ो, कुछ नहीं।

भूमि : फिर भी···

आदर्श : मैं कह रहा था···मैं कह रहा था···बेहतर होता कि तुम उसके मरने से पहले उससे मिल ली होतीं।

भूमि : मिल ली होती ? यानी ?

आदर्श : क्या ख्याल है तुम्हारा, वह फिलासफर अतृप्त और भूखा नहीं मरा ?

[भूमि कोई जवाब नहीं देती]

आदर्श : मैं कह रहा था···मेरा मतलब था कि तुम उसे एक बार···ओब्लाइज कर सकती थीं।

[भूमि अचानक हंस पड़ती है। फिर बेहद खामोश हो जाती है]

भूमि : लेकिन मैं गई थी वहाँ। (आदर्श जैसे सुनता नहीं) सुना, मैं गई थी। (आदर्श फिर नहीं सुनता) मैं गई थी उसके पास···

आदर्श : (अचानक बरस पड़ता है) मुझे मालूम है। मुझे मालूम है। तुमने उससे हँस हँस कर बातें की थीं, मुझे मालूम है। फिर देर तक तुम उसके यहां रुकी थीं, यह भी मालूम है। उसके सामने तुमने बार बार अपने कपड़े संभाले

थे। उसकी बाँहों में गिर गिर गई थीं। उसकी बाँहों पर बार बार चिकोटियां काटी थीं और आखिरकार उससे लिपट गई थीं। लेकिन···लेकिन वह बदसूरत और मुफ्लिस फिलासफर सिर्फ फिलासफर था, और कुछ नहीं। और तुम लौट आई थीं···टूटी हुई, पराजित, क्योंकि वह औरों जैसा नहीं था···वह जीने के लिये मर जाना बेहतर समझता था।

[भूमि उसके संवाद के साथ एक बार जैसे थरथराती है फिर घुटनों के बल दुहरी होती जाती और अन्ततः रोने लगती है]

आदर्श : मुझे माफ कर दो भूमि। मैं तुम्हें तकलीफ नहीं पहुंचाना चाहता था। मैंने यों ही एक झूठ गढ़ दिया था। एक कहानी।

भूमि : लेकिन···

आदर्श : लेकिन क्या, तुम्हें इस तरह रोने की क्या जरूरत थी ?

[भूमि अपने आपको सँभालती है]

भूमि : मैंने समझा कि यह सच है।

आदर्श : (हंस पड़ता है) सच ? मुझे मालूम है। तुम चाहती थीं कि मैं इस बात के सच होने में यकीन कर लूँ। लेकिन यह हो कैसे सकता है ? बहाना चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो, झूठी नफरत तो नहीं पैदा कर सकता। (खामोशी। अचानक जैसे कुछ याद आ जाय) भूमि सुनो, मुझे एक तरकीब सूझी है।

भूमि : क्या ?

आदर्श : भूमि, सुनो, मैंने निर्णय कर लिया है। बस थोड़े से साहस की बात है। ठहरो मैं अभी आया···

[सहसा अन्दर की ओर दौड़ता है। दरवाजे

तक पहुँच कर एक बार भयभीत सा ठहर जाता है फिर जैसे साहस के साथ बिना कोई आहट किए अन्दर चला जाता है। भूमि उसे परेशानी के साथ जाते देखती है फिर इधर उधर टहलने लगती है। लौटने पर आदर्श के हाथ में प्लग सहित बिजली का तार और पारदर्शी प्लास्टिक का एक थैला है। भूमि के करीब आकर वह एक बार फिर दरवाजे की ओर देखता है।]

भूमि : क्या है ?

आदर्श : कुछ नहीं…कुछ नहीं। (आदर्श थैले को जमीन पर डाल देता है और फिर तार का कुछ हिस्सा दांत से छील कर साफ करता है और अपनी कलाई में लपेटता है)

भूमि : क्या कर रहे हो, कुछ बताते क्यों नहीं ?

आदर्श : [भूमि बस थोड़े से साहस की जरूरत होगी। (भूमि तार की ओर देखती है) तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं। यह तो मेरे लिए है। [तुम्हें…तुम्हें थोड़ी सी हिम्मत से काम लेना होगा।

भूमि : क्या करना होगा ?

आदर्श . (जमीन से प्लास्टिक का थैला उठाता है) यह प्लास्टिक बैग देखती हो ? देखो…इसमें मैं…पहले मैं तुम्हें…तुम्हारी हत्या करूंगा और फिर इस बिजली के तार से खुदकुशी करूँगा।

भूमि : आदर्श ! (धीरे धीरे करीब आती है और उसकी आँखों में देखती है)

आदर्श : (झटके से पीछे हटते हुए) पागल मत बनो भूमि।

इससे अब फायदा ? इस मोह को लेकर अब करेंगे भी क्या ? सुनो, तैयार हो ? तैयार हो जाओ। देखो…तुम आंखें बन्द कर लेना। बस, एक मिनट लगेगा। सच मानो भूमि इस तरह दम घुट कर मरते वक्त बिल्कुल ही कष्ट नहीं होता। बस एक धक्का जैसे लगेगा और फिर इसके बाद…इसके बाद तो बिल्कुल ही कुछ नहीं मालूम होगा। (भूमि काँप उठती है) अरे, तुम कांप रही हो ? वैसे काँप तो मैं भी रहा हूँ लेकिन दरअस्ल हम लोग कुछ हड़बड़ा ज्यादा गए हैं। [हाँ इसमें शक नहीं कि जैसे जैसे देर करेंगे हमारी कायरता बढ़ती जायगी] आओ…बैठो इस कुर्सी पर] (भूमि निकट आती है और आदर्श कुर्सी को दर्शकों की ओर घुमा कर रख देता है) बैठो…बैठ जाओ…(भूमि बैठ जाती है) आखें बन्द कर लो भूमि।

भूमि : बन्द हो जायंगी। खुद ब खुद। मरने पर कहाँ खुली रह सकती हैं ! [कहते हैं कि मरते वक्त अगर मारने वाले की तरफ कोई देख ले तो मारने वाले की तस्वीर आँखों में आ जाती है। मैं मरते वक्त तुम्हारी तस्वीर आँखों में लेकर मरना चाहती हूँ।

आदर्श : कितनी रोमान्टिक कल्पना है ! मगर सुनो, क्या सचमुच मारने वाला मैं हूँ ? तुम समझती हो मारने वाला मैं हूँ ? मैं तो सिर्फ साधन हूँ एक माध्यम।

भूमि : सच है। हम न तो एक दूसरे को जिला सकते हैं न मार सकते हैं सिर्फ साधन बन सकते हैं…माध्यम…

आदर्श : (चीखकर) नहीं। यह गलत है। यह गलत है। मैं माध्यम नहीं हूँ मैं किसी दूसरे का हाथ नहीं हूं। मैं

…मैं खुद हूं। भूमि तुम देखो…मेरी तरफ देखो… मेरी ही तस्वीर रहेगी तुम्हारी आँखों में। हत्या मैं कर रहा हूं…सिर्फ मैं।

भूमि : आदर्श।

आदर्श : क्या ?

भूमि : हम लोगों की इस मृत्यु से कोई फर्क पड़ेगा क्या ?

आदर्श : कायर ! भूमि सुनो, मैं जानता हूं कि एक बार हमारी मौत से सारे मुहल्ले में खामोशी छा जायगी, एक भयानक आतंक ! शायद लोग…इस मकान से लोग डरने लगें। किसी अस्पताल में शायद खास तौर से हमारी मौत पर रिपोर्ट तैयार की जायगी। अखबारों की खबरें गर्म हो उठेंगी। शायद हम लोगों के किसी और हत्यारे की तलाश लोग करते रहें। हार कर खीज कर वे फाइलें बन्द कर देंगे और फिर फिल्मों की चर्चा में हमारी घटनाएं भूलने की कोशिश करेंगे। ये कम है क्या ? इन लोगों को इतना दण्ड कम है क्या ?

भूमि : मगर लोगों को पता कैसे चलेगा ? हमारा तो यहां कोई है भी नहीं।

आदर्श : पता चलने का क्या है ? हर आदमी जानता है। हम लोगों में से हर एक को हर आदमी जानता है। बस हां वह उदासीन रहता है। लेकिन दो दिन हमारा दरवाजा नहीं खुलेगा तो जानती हो क्या होगा ?

भूमि : क्या होगा ?

आदर्श : तीसरे दिन लोगों को लगने लगेगा कि यहां कुछ असाधारण हो गया है। लोग समझ नहीं पाएंगे कि कहाँ क्या गड़बड़ है। चौथे रोज़ से लोग यह मान लेंगे कि गड़बड़ है इसलिए उसे खोजा जायगा। उन्हें लगेगा कि छतों पर कौवे ज़्यादा आने लगे हैं। नालियाँ पहले से ज़्यादा गन्दी हो गई हैं। धूल पहले से ज़्यादा उड़ने लगी है। यही नहीं, बल्कि खिड़कियाँ और दरवाज़े कुछ ज़्यादा अकड़ गए हैं। यह याद आते ही लोग दरवाजों-खिड़कियों को खोलने-बन्द करने लगेंगे। हाँ अपवाद कोई होगा तो हमारा ही दरवाजा। इसलिए लोग हमारे दरवाजे को भड़-भड़ाएंगे। और भड़भड़ाएंगे। बार बार भड़भड़ाएंगे फिर उन्हें ज़िद हो जायगी कि यह दरवाजा खुलता क्यों नहीं ? इसलिए वे किसी सन्देह का बहना बना कर दरवाजे को तोड़ देंगे। तब उन्हें मिलेंगी कुछ लाशें…फूली हुई…सड़ती हुई…किस कदर दहशत होगी उन्हें…चीखें मारेंगे लोग…

[भूमि सिर पर हाथ रखती है]

आदर्श : क्या है ?

भूमि : कुछ नहीं सिर चकरा सा गया।

आदर्श : खैर छोड़ो, इससे फायदा क्या। तुम…भूमि तुम… मेरा मतलब है मैं…

भूमि : आदर्श

आदर्श : क्या ?

भूमि : कुछ नहीं लेकिन तुम इतनी देर क्यों कर रहे हो ?

आदर्श : देर हाँ…हाँ…

[आदर्श टाइयों में गाँठ लगाकर भूमि को कुर्सी से बाँध देता है और उसके चेहरे पर प्लास्टिक का थैला चढ़ा देता है। भूमि दो क्षण बाद ही

छटपटाने लगती है। इसी समय पृष्ठभूमि से अखबार वाले की आवाज आती है]

हाकर : (नेपथ्य से) आ गया टाइम्स स्पैशल···आ गया··· प्लानिंग मिनिस्टर बर्खास्त । प्रधान मंत्री नाराज़··· टाइम्स स्पेशल······आ गया···प्लानिंग मिनिस्टर बर्खास्त···प्रधान मंत्री द्वारा डिसमिस···आ गया··· आ गया···

[भूमि छटपटाकर मरती है। आदर्श बिजली का तार कलाई में बाँधे हुए अन्दर जाता है]

[अंधेरा]

☐

चौथा अंक

●

[पुलिस स्टेशन का एक कमरा । एक बेंच पर आदर्श बैठा हुआ है। मर्दुमशुमारी वाले युवक को लेकर हवलदार आता है फिर तुरन्त बाहर झाँककर चिल्लाता है]

हवलदार : अरे ये औरत अभी तक यहाँ बैठी है ? ऐई भाग यहाँ से···भाग नहीं तो चूतड़ों पर डण्डे लगाऊँगा··· भाग । आ जाते हैं पता नहीं कहाँ से ।

[लौटकर मेज की फाइलें उलटता है]

युवक : (आदर्श से) नमस्कार जनाब ।

आदर्श : (उत्तर नहीं देता)

युवक : आपने शायद मुझे पहचाना नहीं। नहीं न ?

आदर्श : (उत्तर नहीं देता)

युवक : मैं मर्दुमशुमारी के लिए आपके यहाँ गया था। आपकी श्रीमती जी भी थीं न ? आप यहाँ कैसे आए जनाब···मैं तो···बात ये है कि

हवलदार : अरे तुम बड़बड़ क्या कर रहे हो जी ।

युवक : नहीं···वो, बात ये है कि ये साहब मुझे जानते हैं···

हवलदार : (आदर्श से) क्या ? तुम इसे जानते हो ?

आदर्श : (युवक से) तुम्हारी मीटिंग का क्या हुआ ?

युवक : (सन्नाटे में आकर) म-मीटिंग···वो···नहीं आप शायद किसी और के बारे में कह रहे हैं···मैं···मैं···

हवलदार : (उठकर) हूं मीटिंग। क्या मीटिंग जी ? (युवक से) क्यों जी, कौन सी मीटिंग ? कहाँ हुई थी ?

युवक : नहीं···वो···मैं वो नहीं हूँ···मैं तो···

हवलदार : हूँ। मीटिंग में और कौन आता है ?

युवक : (जवाब नहीं देता।)

हवलदार : कहां होती है मीटिंग ?

युवक : मुझे नहीं मालूम···मैं···आप इनसे पूछ लीजिए, मैं···

हवलदार : (आदर्श से) क्यों जी ?

आदर्श : मुझे नहीं मालूम।

युवक : जी देखिए··· (आदर्श से) जनाब आप उस वक्त कुछ परेशान थे आपके घर में···मुझे बिलकुल याद है···

[बाहर पुलिस अफसर की दहाड़]

पुलिस अफसर : (नेपथ्य से) हरामज़ादा···बेंत लाओ···अबे बोल···

एक स्वर : (नेपथ्य से) मैं मर जाऊँगा···मुझे छोड़ दीजिए

पुलिस अफसर : बोल।

[नेपथ्य में किसी के बुरी तरह मारे जाने की और कराहने की आवाज़ें]

युवक : देखिए मैं···मेरा आइडेण्टिटी कार्ड आप देख लीजिए

हवलदार : कार्ड ? कहाँ है ?

[नेपथ्य में मार और कराह जारी]

युवक : (मेज़ के पास से थैला उठाकर) इसमें मेरा लाइब्रेरी का कार्ड भी है

हवलदार : थैला इधर दो।

युवक : जी···मैं दिखा देता हूँ न···।

हवलदार : हरामी का पिल्ला !

[थैला छीनकर उलट देता है। बहुत से कागज़ और किताबें]

युवक : ये किताबें लाइब्रेरी की हैं··

हवलदार : (किताबें उलट कर) सूअर साला···क्या है ये किताबें ?

युवक : ये···इसमें आप बेकार मुझ पर शक कर रहे हैं।

[बाहर मार, चीखें कराहें]

हवलदार : फिलिस्तीनी मुक्ति मोर्चा। मैक्लुहान का दर्शन। हूं·· और क्या क्या किताबें हैं ? परचे। बहुत अच्छा बेटे, बहुत अच्छा···

[पुलिस अफसर का प्रवेश। उत्तेजित]

पुलिस अफसर : (बाहर की ओर देखकर) अरे साले को धूप में लिटा दे। उलट। मादर···। (हवलदार से) एई माधो, देखो ट्रक गया या अभी है। उनको बोलकर आओ मजिस्ट्रेट साला आए न आए लाठी चार्ज करें। साला·· हद हो गई। गोदाम लूटेंगे। अरे बोल के आ··

[हवलदार जाता है]

पुलिस अफसर : ये किताबें कौन लाया साला···

युवक : जी बात ये है ··लाइब्रेरी की हैं···

पुलिस अफसर : लाइब्रेरी की हैं। यहाँ क्यों लाया। उठा यहाँ से।

[युवक जल्दी जल्दी किताबें समेटता है]

पुलिस अफसर : (आदर्श से) तुमने बयान पर दस्तखत किए ?

आदर्श : हाँ।

पुलिस अफसर : कुतिया के ताऊ मजिस्ट्रेट के सामने बदल मत जाना नहीं भुस भर दूंगा।

हवलदार : (आकर) कह दिया साहब। कण्ट्रोल रूम ने कहा है कि कमिश्नर साहब ने बोल दिया है कि पुलिस गार्ड गंधे साहब की कोठी से हटालो।

पुलिस अफसर : हूं हटालो। साला मज़ाक है। गंधे मिनिस्टर नहीं रहा लेकिन भिखारी भी नहीं हुआ है। अपना काम देखो।

हवलदार : अच्छा''' मगर वो किताबें'''

पुलिस अफसर : कूड़ा मेरी मेज़ पर फैलाना था ?

हवलदार : मगर साहब वो खतरनाक किताबें है। (युवक से) किताबें निकाल। (किताबें छीन लेता है) ये देखिए '''चीन की किताबें हैं''' माक—लू-हान कोई चीनी लेखक है। और ये देखिए फिलिस्तीनी मुक्ति मोर्चा।

पुलिस अफसर : फिलिस्तीनी मुक्ति मोर्चा ? लिबरशन फ्रण्ट ?

हवलदार : फिलिस्तीनी भी चीनी शहर है सर।

पुलिस अफसर : (युवक से) तुम्हारी किताबें हैं ?

हवलदार : और यह बदमाश इसे भी जानता है (आदर्श की ओर इशारा)

पुलिस अफसर : (आदर्श से) तुम इसे जानते हो ?

हवलदार : और साहब यह लड़का मीटिंग करता है।

पुलिस अफसर : (उठकर बाहर देखकर) ओह सुन साले के टखनों के बीच लकड़ी डालकर मरोड़ दे'''

[बाहर से चीख और कराह]

पुलिस अफसर : (युवक से) हूं, कहाँ मीटिंग होती है तुम्हारी ?

युवक : जी कहीं नहीं। मैं स्टूडेण्ट हूं।

पुलिस अफसर : कौन कौन आता है मीटिंग में ?

युवक : मुझे नहीं मालूम।

पुलिस अफसर : (कोई फोटो निकालकर) इसे पहचानते हो।

युवक : नहीं।

पुलिस अफसर : यह कौन है ?

युवक : पता नहीं।

पुलिस अफसर : सात दिसम्बर को तुम किसके यहाँ गए थे शाम को'''

युवक : जी'''नहीं'''मैं नहीं'''

पुलिस अफसर : (एक अखबार निकालकर) यह अखबार उसी के यहाँ छपता है।

युवक : मुझसे आप यह सब'''

[बाहर से फिर चीख और कराह]

पुलिस अफसर : (फोटो दिखाकर) यह कहाँ रहता है ?

युवक : जी मुझे नहीं मालूम'''

पुलिस अफसर : यह कहाँ रहता है ?

युवक : जी'''

पुलिस अफसर : (बाहर देखकर) तोड़ दो साले के टखने। (युवक से) यह कहाँ रहता है !

[बाहर तीखी चीख]

युवक : (चुप)

पुलिस अफसर : (सहसा बुरी तरह मारना शुरू करता है) कहाँ रहता है ? कहाँ रहता है ? ऐं'''कहाँ रहता है ?

[युवक दुहरा होकर गिरता है। किडनी और पसलियों पर अफसर बूटों से तीखी चोटें करता है। युवक गों-गों की आवाज़ करता हुआ छट-पटाता है। अफसर उसे छोड़कर आदर्श की ओर लौटता है]

पुलिस अफसर : (हवलदार से) इसका कागज कहाँ है !

[हवलदार कागज़ देता है]

पुलिस अफसर : बयान पढ़ लिया है।

आदर्श : जी।
पुलिस अफसर : पूरे होशो हवास से।
आदर्श : जी।

[युवक छटपटाता है। नेपथ्य से चीख़]

पुलिस अफसर : इसे एक बार फिर पढ़कर सुना दो इसका बयान।
हवलदार : मैं आदर्श वल्द मानव साकिन टूटानगर मुहल्ला बेकार गंज मकान नं० चौबीस अपने पूरे होशो हवास में बयान देता हूं कि···
आदर्श : वो देखिए वो··
हवलदार : क्या है!
आदर्श : उस लड़के को खून की उल्टी हुई है···
पुलिस अफसर : बहाने करता है मक्कार···हरामी···

[बाल पकड़कर उठाता है और सहसा छोड़ देता है।]

हवलदार : क्या हुआ? बेहोश हो गया। पानी डालता हूं अभी···
पुलिस अफसर : अँ नहीं···ज़रा देखना···ये तो···
हवलदार : (लपककर युवक को टटोलता है) गड़बड़ हो गई लगती है सर! पुलिस हस्पताल ले चलूँ।
पुलिस अफसर : अहमक। सूअर। मरवाएगा। साला मेडिकल आफिसर नया आ गया है। हद हो गई · देख ज़रा ध्यान से···
पत्रकार : (नेपथ्य से) अमाँ कहां हो कोतवाल साहब। अबे ए···क्या उसकी टाँगें ही तोड़ दोगे ऐं।
पुलिस अफसर : छोड़ दो। छोड़ दो उसको। ये साला आ मरा। सुनो कहना···कहना···हाँ, कहना छत से कूदकर

भाग रहा था मर गया। (आदर्श से) तू कह दे मैंने देखा है। छत से कूदा और मर गया।
पत्रकार : (नेपथ्य से) अरे ये वो है? पकड़ में कैसे आ गया? मुझे इसका फोटो दिलवाओ···ऐं ··ज़रा दिखाओ तो इसका चेहरा इधर करो···
पुलिस अफसर : (आदर्श से) सुन रहे हो? तुम्हारा यह बयान फाड़ दूँगा और तुम्हें रिहा कर दूँगा···
आदर्श : लेकिन मैं रिहा नहीं होना चाहता·· मैं।
पत्रकार : (आते हुए) हाँ जी कोतवाल साहब, कैसे मिज़ाज हैं? ऐं·· ये क्या कोई मर्डर हो गया?
पुलिस अफसर : नहीं वो···साला हवालाती था छत से कूद कर भाग रहा था, मर गया।
पत्रकार : कब?
पुलिस अफसर : बिलकुल अभी हुआ ये हादसा।
पत्रकार : सुना आपने कोई नक्सलाइट पकड़ा है।
पुलिस अफसर : यही था यार। सारा मामला बिगाड़ दिया कम्बख़्त ने। इसके ज़रिए मैं इसके दल तक पहुंचना चाहता था।
पत्रकार : नाम क्या था?
पुलिस अफसर : नाम?···नाम···क्या वो ··हां···सत्येन बोस गां-गुली।
पत्रकार : बोस गांगुली?
पुलिस अफसर : हां बोस गांगुली।
हवलदार : बोस गांगुली। बोस गांगुली ही है।
पत्रकार : हूं। और डिटेल? कुछ और बातें।
हवलदार : इसके पास किताबें थीं।
पुलिस अफसर : चीनी लेखक मैक्लुहान की किताब और···

हवलदार : चीनी शहर फिलिस्तीन पर एक किताब।

पत्रकार : चीनी लेखक (डायरी निकालकर) ठहरो मैं लिख लूँ ' चीनी लेखक।

पुलिस अफसर : मैक्लुहान की किताब।

पत्रकार : बढ़िया है। अँग्रेज़ी वालों को पीट दूँगा। यह खबर हिन्दी अखबार पहले छापेगा। चीनी लेखक मैक्लुहान '''हाँ याद आया फाह्यान का साथी है यह। दूसरी '''फिलिस्तीन'''चीन के एक शहर की कहानी। बढ़िया। मगर ये कूदा कहाँ से ?

पुलिस अफसर : कहां से ?

हवलदार : पीछे। कोतवाली के पीछे। मैं उठा लाया। ये आदमी वहीं था। इसके सामने कूदा।

पत्रकार : हूं। बढ़िया। उस्ताद अब ये स्टोरी किसी अँग्रेज़ी वाले को मत दे देना। अच्छा जी। आज्ञा'''

[पत्रकार जाता है]

पुलिस अफसर : (आदर्श से) मैं तुमसे बहुत खुश हूं। ये रहा तुम्हारा बयान (बयान फाड़ता है) यू आर फ्री। तुमको छोड़ रहा हूं। माधो, इनके लिए चाय'''

[बैठता है।]

आदर्श : मगर आप मुझे छोड़ कैसे सकते हैं ?

पुलिस अफसर : वह मैं देख लूँगा। डोण्ट वरी।

आदर्श : न।

पुलिस अफसर : क्या मतलब ?

आदर्श : मैंने अपने पिता की हत्या की, बीवी की हत्या की। मैं खुद मरना चाहता था लेकिन बिजली का फ्यूज़ उड़ गया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि फाँसी का मौका भी मैं छोड़ दूँगा। बयान अब आप फिर से लिख लीजिए।

पुलिस अफसर : अरे इसको देखो।

हवलदार : पागल हुआ है क्या ?

आदर्श : लेकिन आप लोग इस तरह मेरे पीछे क्यों पड़ गए ? मैंने खून किए हैं। इक़बालिया बयान भी दे रहा हूं और मैं फांसी पाने के लिए तैयार हूँ।

पुलिस अफसर : सूअर साला। और इस नवसलिए की मौत की गवाही तेरा बाप देगा ?

आदर्श : गवाही मैं नहीं दूँगा। उसे तुमने मारा है वह तुम्हारा सरदर्द है। मेरा नहीं।

पुलिस अफसर : तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।

आदर्श : हो सकता है

हवलदार : साले गवाही तो तेरा फरिश्ता भी देगा ''(पीटता है)

आदर्श : (कराहता नहीं)

पुलिस अफसर : (इशारे से हवलदार को रोकता है) तो तुम्हारा यही फैसला है ?

आदर्श : हां। गवाही नहीं दूँगा। और दूँगा तो उसकी मौत के बारे में जो सच बात है वह कह दूँगा।

पुलिस अफसर : हाँ। जो सच बात है।

आदर्श : किस छत से गिरा है वह ? कहाँ गिरा है ? कब गिरा है ? कब गिरा है ?

हवलदार : मैं ठीक करता हूं अभी।

पुलिस अफसर : रहने दो। ठीक है। दे दो गवाही। एक बात बताऊँ गवाही देने से पहले तुम्हें पागलखाने न भिजवाया तो मैं काहे का। माधो, इसे रस्सियों से बाँध दो। करूंगा अच्छा इन्तजाम करूंगा तुम्हारा। गवाही की नौबत

ही नहीं आएगी। समझे रस्सी लाओ। बाँधो साले को।

आदर्श : मेरे बाप और बीवी की लाशों का आप क्या करेंगे? उस मामले को कहाँ दबाएंगे।

पुलिस अफसर : ये मेरा हेडेक है, मिस्टर, मेरा। जहाँ इस छोकरे का मामला जायगा वहीं उनका भी। फाइल में।

आदर्श : यू कैन नाट डू दैट!

पुलिस अफसर : किया है और करूंगा भी। माधो इसका केस नए सिरे से बनाओ। पागलखाने जाएगा। मरने से ज़्यादा मज़ा आएगा वहाँ। अरे आप···

[पुलिस अफसर उठ खड़ा होता है। शिवराज गंधे आता है]

शिवराज गंधे : बैठो बैठो। ऐसे चौंकने की ज़रूरत नहीं। मिनिस्टर नहीं रहा अब। बैठो।

पुलिस अफसर : आप बैठिए साहब।

[गंधे मेज़ पर ही बैठ जाता है]

शिवराज गंधे : देखो गीता में कहा गया है कि तेरा काम तो दायित्व निभाना है। फल की चिन्ता तू उस पर छोड़ दे। है ···नहीं है···दोनों ही स्थितियाँ मेरे लिए बराबर हैं···

आदर्श : सुनिए···

पुलिस अफसर : (हवलदार से) इसे अन्दर ले जाओ।

आदर्श : गंधे साहब मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं।

पुलिस अफसर : पागल है साहब। अभी पकड़ा है। ले जाओ जी।

आदर्श : ये लोग झूठ बोलते हैं

शिवराज गंधे : अच्छा।

आदर्श : आप सिर्फ दो मिनट मेरी बात सुन लीजिए।

शिवराज गंधे : सुनाओ।

आदर्श : मैंने···आपको याद होगा आप मेरे घर आए थे उस दिन···

शिवराज गंधे : हूँ। अच्छा।

पुलिस अफसर : क्या बकवास है। वक़्त ज़ाया कर रहा है।

आदर्श : मैंने अपने बाप और अपनी बीवी का खून कर दिया। मैं इकबालिया बयान देना चाहता हूं और ये लोग इनकार कर रहे हैं

शिवराज गंधे : स्ट्रेंज (पुलिस अफसर से) रियली स्ट्रेंज। तुम लोग अच्छे खासे आदमी को फँसा देते हो···इसका बयान क्यों नहीं लिखते?

पुलिस अफसर : लिख लिया। एक दम लिख लिया। ले जाओ भाई इसको···

[हवलदार आदर्श को अन्दर ले जाने लगता है]

आदर्श : देखिए मैं आपसे अपील करता हूँ। आप यकीन कीजिए। अभी देखिए उस तरफ देखिए वो लाश पड़ी है। इसका मर्डर किया गया है·· इसका···

पुलिस अफसर : और इसका मर्डर भी तुम्हीं ने किया है। हैं। गुड। वेरी गुड। ले जाओ अन्दर।

आदर्श : तुम लोग·· तुम लोग···मुझे फाँसी क्यों नहीं देते··· क्यों नहीं देते या इसी की तरह मुझको मार दो··· मुझे भी···

पुलिस अफसर : मार देंगे। मार देंगे। ले जाओ।

[हवलदार उसे खींच ले जाता है]

शिवराज गंधे : इन्टरेस्टिंग।

पुलिस अफसर : आपने क्यों तकलीफ की। मुझे बुला लेते। मेरे लिए तो आप अभी भी वही हैं।

शिवराज गंधे : अच्छा है कि तुम ऐसा मानते हो। लेकिन काम मेरा

है इसलिए मेरा ही आना सही था। मैं दरअस्ल एक डिमास्ट्रेशन करना चाहता हूँ। एक बहुत बड़ा डिमास्ट्रेशन। एक दम असाधारण और शाकिंग।

पुलिस अफसर : आपके पीछे आज भी लाखों लोग हैं।

शिवराज गंधे : इतने मुगालते में नहीं रहता। आई वाण्ट पावर। वन्स अगेन। जूट लाबी ने निकलवाया है मुझे। मेरी लाबी इतनी आसानी से नहीं हारती। आई शैल फोर्स दि प्राइम मिनिस्टर। प्रधान मंत्री को भी पीछे हटना होगा।

पुलिस अफसर : मैं तो बहुत छोटा आदमी हूँ। मैं इसमें भला क्या मदद करूँगा ?

शिवराज गंधे : तुम्हीं करोगे। डरो नहीं। तुम्हारा भी फायदा होगा।

पुलिस अफसर : मुझे अपना फायदा नहीं चाहिए। आपको सक्सेस मिले मेरा यही सबसे बड़ा फायदा है।

शिवराज गंधे : लफ्ज़ों को इतना मत घिसो। खैर। मैं एक डिमास्ट्रेशन कर रहा हूँ। तैयारी बड़े पैमाने पर होगी। प्रधान मंत्री की आँख का तारा बना हुआ है पारस। पारस शैल हैव टु रिज़ाइन। पारस का इस्तीफा माँगा जायगा।

पुलिस अफसर : मेरे लायक काम बताइए।

शिवराज गंधे : तुम्हारे लायक···बताता हूँ। ड्यूटी पर तो तुम्हीं होगे वहाँ। तुम लाठी चार्ज करवा दो। और जबर्दस्त। दो चार लोग मर ही जायें तो ठीक रहेगा। मुझे भी मत छोड़ना।

पुलिस अफसर : आप क्या बात करते हैं साहब···

शिवराज गंधे : पागल मत बनो, मैं कह रहा हूं उसे सुनो। तुम लाठी चार्ज करोगे तो पारस भी तुमसे खुश होगा और प्रधान मंत्री भी। मेरा फायदा यह होगा कि मेरा आन्दोलन भड़क जायगा।

पुलिस अफसर : आपने मुश्किल काम सौंपा है लेकिन करूँगा।

शिवराज गंधे : ठीक। मगर सुनो······एक बात सूझी···ये पागल आदमी।

पुलिस अफसर : उसे भूल जाइए साहब वो···

शिवराज गंधे : कहता है कि उसने बीवी और बाप का मर्डर किया। यार कुछ ऐसा नहीं हो सकता···

[सोचता है]

पुलिस अफसर : क्या ?

शिवराज गंधे : ठहरो। सोचने दो। मान लो कहा जाय पारस के नाजायज़ ताल्लुकात थे इस आदमी की बीवी से इसीलिए उत्तेजित होकर इसने बीवी का मर्डर कर दिया। बाप को पिक्चर से हटा दो। बीवी को मारने के बाद यह पागल हो गया।

पुलिस अफसर : आइडिया बुरा नहीं है साहब लेकिन इस आदमी का क्या भरोसा यह क्या कहे···आपकी अपनी पहले वाली योजना ही अच्छी है।

शिवराज गंधे : हूँ। क्या कहेगा ? यही बयान देगा न कि इसने बीवी को मारा या यह भी नहीं कहेगा ?

पुलिस अफसर : यह तो कहेगा। वह तो रट लगाए है कि उसे फाँसी चाहिए क्योंकि उसने मर्डर किया है।

शिवराज गंधे : पागल है लेकिन कोशिश की जाय तो यह एक और अच्छा काम कर सकता है। इसको भड़काया जाय कि यह जल कर मर जाय।

पुलिस अफसर : ओह, मैं माफी चाहता हूँ अब मैं एक बात बता दूँ। दरअस्ल इसने कोशिश खुदकुशी की ही की थी।

शिवराज गंधे : गुड। वेरी गुड। प्राब्लेम रहेगी इसके खत की। उसका भी कुछ किया जा सकता है। बात बन रही है। पारस से अपनी बीवी के नाजायज़ संबंध से उत्तेजित होकर इसने अपनी बीवी को मार डाला और अपना विरोध प्रकट करने के लिए इसने आत्मदाह कर लिया। आत्मदाह के लिए ठहरो · प्रधानमंत्री की कोठी से एक फर्लांग पहले वाला चौराहा · चौराहे का पार्क · सुबह का धुँधलका···अचानक आग की लपटें। जब तक लोग पहुँचते हैं···मैं राज़ी करूँगा उसे। राज़ी कर लूंगा। अचानक उस दिन लोग देखेंगे सहसा वह जली हुई लाश···पारस का भविष्य बन चुकी होगी···सुनो बुलाओ उसे···अभी बुलाओ···

[अँधेरा]

□

पाँचवाँ अंक

[सुबह का धुंधलका स्थान-पार्क]

पत्रकार : (आकर) बाप रे हद ही हो गई। पता नहीं लोग कहाँ हैं।

पुलिस अफसर : (सादी वर्दी में) हलो तुम आ गए।

पत्रकार : खाक आ गए। हद हो गई। यह भी कोई डिमास्ट्रेशन का वक्त था। और कुहरा नहीं देख रहे हो कितनी बुरी तरह घिरा हुआ है। साला फोटो भी नहीं आएगा।

पुलिस अफसर : इसी में ठीक फोटो आएगा। चिन्ता मत करो।

पत्रकार : मगर यार यह क्या वक्त हुआ डिमास्ट्रेशन का।

पुलिस अफसर : इससे अच्छा और कोई वक्त नहीं हो सकता था।

पत्रकार : अमाँ हटो यार। नींद खराब कर दी साली।

[धुंधलके में दो छायाएँ और आती हैं। एक शिवराज गंधे है और दूसरा आदर्श। दोनों साफ नहीं दीखते]

शिवराज गंधे : (अस्पष्ट आकृति) सुनो, अरे वो पेट्रोल वाला···

पत्रकार : अरे गंधे साहब, गंधे साहब तो आ गए।

पुलिस अफसर : श्! (चुप करा देता है)

[तीसरी छाया एक टिन लेकर आती है]

शिवराज गंधे : बड़ी देर कर दी तुमने। टिन रखो। अच्छा सुनो आदर्श। नाऊ बी क्विक्। परचों का यह बंडल हवा में इस तरह उछाल देना कि परचे चारों ओर फैल जायें। उसके बाद यह आदमी पेट्रोल तुम्हारे ऊपर डाल देगा। माचिस'''माचिस है न तुम्हारे पास ?

व्यक्ति : ये लीजिए माचिस ।

शिवराज गंधे : पेट्रोल डालकर यह आदमी यहाँ से चला जायगा। इसके निकल जाने के बाद तुम पूरे ज़ोर के साथ चिल्लाना ''पारस मुर्दाबाद। पारस मुर्दाबाद और माचिस लगा देना। समझ गए।

पत्रकार : ये ''ये क्या हो रहा है ?

पुलिस अफसर : चुप।

शिवराज गंधे : ठहरो। मैं यहाँ से हट जाता हूँ। मेरे दूर निकल जाने के बाद तुम टिन का पेट्रोल इसके ऊपर डाल देना '' हाँ। ठीक। आदर्श तुम सब समझ गए न !

आदर्श : नहीं।

शिवराज गंधे : क्या मतलब।

आदर्श : आई रिफ्यूज़।

शिवराज गंधे : ये क्या बात हुई ?

आदर्श : मुझे आपका प्रस्ताव'''नहीं'''मैं'''नहीं, मुझे जाने दीजिए'''

शिवराज गंधे : अरे रे'''पकड़ो इसे'''

[आदर्श भागने की कोशिश करता है। टिन लाने वाला आदमी गंधे के साथ मिलकर उसे पकड़ता है]

आदर्श : छोड़ दो'''छोड़ दो मुझे'''

पुलिस अफसर : ओ हो इसने तो सारा काम गड़बड़ कर दिया'''

[पुलिस अफसर भी दौड़ कर जाता है। अ की गर्दन पर इस तरह चोट करता है आदर्श लड़खड़ा जाता है। मारकर उसे बे करने के बाद लोग जल्दी-जल्दी पेट्रोल देते हैं और भागते हुए आग लगा देते हैं]

[अँधेरा]

□□